दशलक्षणधर्म-विधानादि पूजा

प्रकाशक
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-३६४२५०

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प-८४

ॐ

* नमः सिद्धेभ्यः *

कवि श्री टेकचन्दजी विरचित–

दशलक्षणधर्म-विधानादि पूजा

* प्रकाशक *

श्री दि० जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ-३६४२५० (सौराष्ट्र)

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

प्रथमावृत्ति	६०००	:	वीर सं०	२४७९
द्वितीयावृत्ति	११००	:	वीर सं०	२४८८
तृतीयावृत्ति	११००	:	वीर सं०	२४९८
चतुर्थावृत्ति	११००	:	वीर सं०	२५०१
पंचमावृत्ति	२१००	:	वीर सं०	२५०४
छष्टमावृत्ति	२१००	:	वीर सं०	२५०६
सप्तमावृत्ति	१०००	:	वीर सं०	२५१२
अष्टमावृत्ति	३०००	:	वीर सं०	२५१५
नवमावृत्ति	२०००	:	वीर सं०	२५२०
दशमावृत्ति	३०००	:	वीर सं०	२५२३

मूल्य : १०=००

मुद्रक :
स्मृति ऑफसेट
सोनगढ़–३६४२५०
Phone : (०२८४६) ४४३८१

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

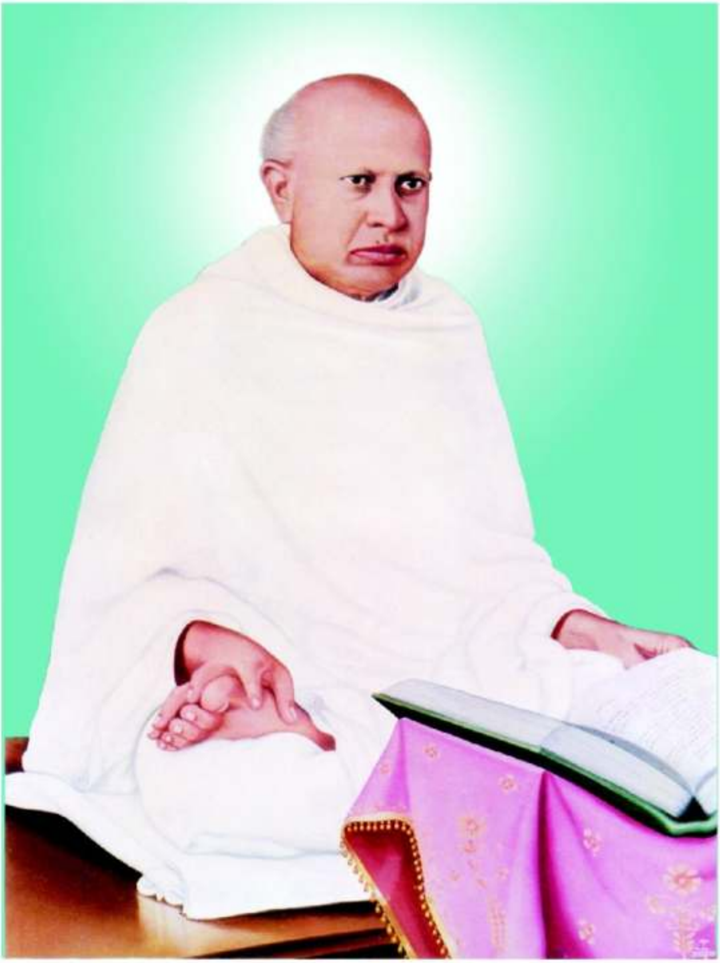

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

निवेदन

कविवर पंडित श्री टेकचन्दजी रचित 'दशलक्षणधर्म-विधानपूजा' की अनेक आवृत्ति सोनगढ - ट्रस्टकी ओरसे प्रकाशित हो चुकी हैं। मुमुक्षुसमाजमें इस विधानपूजाकी विशेष माँग होनेसे इसकी यह दशमी आवृत्ति प्रकाशित करते हुए प्रकाशनसमिति प्रसतताका अनुभव करती है।

शुद्धात्मतत्त्वदृष्टिप्रधान अध्यात्म साधनाके साथ मुमुक्षु-समाजमें वीतराग देव-गुरु-धर्मकी भक्तिभावभीनी उपासनाका–निश्चय-व्यवहारके सुमेलपूर्वक आराधनाका–प्रचलन अध्यात्मयुगस्रष्टा देव-गुरुभक्त पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीका ही पुनीत प्रताप है। अध्यात्म-तीर्थधाम सोनगढमें पूज्य गुरुदेवश्रीके पावन प्रभावसे एवं धन्यावतार प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनकी देव-गुरु-भक्तिभीनी मंगल प्रेरणासे आराधनापर्व दशलक्षणपर्युषणपर्वमें यह पूजा, माँड़ला माँड करके, जिनमन्दिरमें अति भक्तिभावसे नियमित की जाती है। तदनुसार अन्य गाँवोंमें भी मुमुक्षुमण्डलों द्वारा यह उपक्रम चलता है।

'दशलक्षणधर्मविधानपूजा'में १० कोठोंका रंगोली या रंगीन चावलसे माँडला बनाकर अनुक्रमसे प्रत्येक कोठेमें उत्तम क्षमादि धर्मके जितने अवान्तर भेद हैं उनके प्रतीकके रूपमें '卐' पुष्प या छत्र आदिके बिबे मांडने चाहिये। फिर कलश स्थापन करके वेदीमें दशलक्षणयन्त्रकी स्थापना करें। जिनेन्द्र-अभिषेक करके सकलीकरणविधि (शुद्धि) कर श्री देव-शास्त्र-गुरुपूजाका वा चैवीस

जिनकी पूजा करें । तत्पश्चात् इस मंडलविधान पूजाका प्रारम्भ करना चाहिये । मण्डलविधानपूजाके उद्यापन निमित्त अन्तमें साधर्मियोंको यथाशक्ति प्रभावना बाँटकर दान भी करना चाहिये ।

इस विधानपूजाकी प्रथम आवृत्ति सुरतनिवासी श्री मूलचन्द किसनदास कापडियाजीके प्रकाशनके आधारसे मुद्रित की गई थी । उस समय स्व० श्री कापडियाजीने सहर्ष सम्मति दी थी, तदर्थ प्रकाशनसमिति उनकी आभारी है ।

सोनगढ
बहिनश्री-चम्पाबेन-८४वीं जन्मजयंति,
भादों कृष्णा २, वि. सं. २०५४

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,
सोनगढ-३६४२५०

भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यदेवप्रणीत दशलक्षणधर्म

उत्तमखममद्दवज्जवसच्चसउच्चं च संजमं चेव ।
तवचागमकिंचण्हं बम्हा इदि दसविहं होदि ।।७०।।

उत्तमक्षमाका लक्षण

कोहुप्पत्तिस्स पुणो बहिरंगं जदि हवेदि सक्खादं ।
ण कुणदि किंचि वि कोहो तस्स खमा होदि धम्मो त्ति ।।७१।।

मार्दवधर्मका लक्षण

कुलरूवजादिबुद्धिसु तपसुदसीलेसु गारवं किंचि ।
जो ण वि कुव्वदि समणो मद्दवधम्मं हवे तस्स ।।७२।।

आर्जवधर्मका लक्षण

मोत्तूण कुडिलभावं णिम्मलहिदएण चरदि जो समणो ।
अज्जवधम्मं तइयो तस्स दु संभवदि णियमेण ।।७३।।

सत्यधर्मका लक्षण

परसंतावयकारणवयणं मोत्तूण सपरहिदवयणं ।
जो वददि भिक्खु तुरियो तस्स दु धम्मो हवे सच्चं ।।७४।।

शौचधर्मका लक्षण

कंखाभावणिवित्तिं किच्चा वेरग्गभावणाजुत्तो ।
जो वट्टदि परममुणी तस्स दु धम्मो हवे सोच्चं ।।७५।।

संयमधर्मका लक्षण

वदसमिदिपालणाए दंडच्चाएण इंदियजएण ।
परिणममाणस्स पुणो संजमधम्मो हवे णियमा ।।૭૬।।

उत्तम तपका लक्षण

विसयकसायविणिग्गहभावं काऊण झाणसज्झाए ।
जो भावइ अप्पाणं तस्स तवं होदि णियमेण ।।૭૭।।

त्याग धर्मका लक्षण

णिव्वेगतियं भावइ मोहं चइऊण सव्वदव्वेसु ।
जो तस्स हवे चागो इदि भणिदं जिणवरिंदेहिं ।।૭૮।।

आकिञ्चन्य धर्मका लक्षण

होऊण य णिस्संगो णियभावं णिग्गहित्तु सुहदुहदं ।
णिद्दंदेण दु वट्टदि अणयारो तस्स किंचण्हं ।।૭૯।।

ब्रह्मचर्य धर्मका लक्षण

सव्वंगं पेच्छंतो इत्थीणं तासु मुयदि दुब्भावं ।
सो बम्हचेरभावं सक्कदि खलु दुद्धरं धरिदुं ।।૮૦।।

(द्वादशानुप्रेक्षामेंसे)

ॐ

कविवर श्री टेकचन्दजी कृत

श्री दशलक्षण मण्डलविधान

(जोगीरासा)

नेमीनाथो, दे तो साथो[1], भव भव और न चाहूं ।
भक्ति तिहारी, निशिदिन मन वच, काय लाय करि लाऊँ ।।
धर्म कह्यो तुम, वानी दश विध, सो मोहि होउ सहाई ।
करुणासागर, समरस गर्भित, शीश नमों थुति गाई ।।१।।

(गीता छन्द)

धर्म के दश कहे लक्षण, तिन थकी जिय सुख लहै ।
भवरोग को यह महा औषधि, मरण जामन दुख दहै ।।
यह विरत नीका मीत जीका[2], करौ आदरतैं सही ।
मैं जजौं दशविध धर्मके अंग, तासु फल ह्वै शिवमही ।।२।।

(पद्धड़ि छन्द)

यह धर्म भवोदधि नाव जान, या सेयें भव दुख होइ हान ।
यह धर्म कल्पतरु सुक्खपूर, मैं पूजौं भव दुख करन दूर ।।३।।

(गीता छन्द)

यह विरत मन कपि गले माहीं, सांकली सम जानिये ।
गज अक्ष जीतन सिंह जैसो, मोहतम रवि मानिये ।।

---

१. तुम्हारा साथ । २. जीव का मित्र ।

सुरथान माहीं विरत नाहीं, मनुज हू शुभ कुल लहै ।
तातैं सु अवसर है भलो, अब करौ पूजा धुनि कहै ।।४।।

(वेसरी छन्द)

जाने दशलक्षण व्रत कीना, ते सतपुरुषनिमें परवीना ।
भवसागर फिरनौ मिटि जावै, जो नर दशलक्षण वृष भावै ।।५।।

(भुजंगप्रयात छन्द)

यही धर्म सारं करै पाप क्षारं, यही धर्म सारं करै सुख अपारं ।
यहीधर्मधीराहरैलोकपीरा, यहीधर्मभीराकरैलोकतीरा ।।६।।

(त्रिभंगी छन्द)

यह धर्म हमारा, सब जग प्यारा, जगत उधारा हितदानी ।
यह दशविध गाया, जन मन भाया, उच्च बताया जिनवानी ।।
यह शिव करतारा, अघतैं न्यारा, भवि उद्धारा मुनि धारा ।
ताको मैं ध्याऊँ, शीश नवाऊँ, अर्घ चढाऊँ सुखकारा ।।७।।

(चौपाई छन्द)

या व्रतकी महिमा कहा वीर, दशविध धर्म हरै भवपीर ।
इसी धर्म विन जग भरमाय, जजहु धरम अति दुरलभ पाय ।।८।।

(दोहा)

दश प्रकारको धर्म यह, दशविध सुतरु जान ।
वांछित पद सेवक लहैं, अधिक कहा सुखदान ।।९।।

सोरठा--धर्म हमारा नाथ, धर्म जगतका सेहरा ।
भव भवमें हो साथ, और न वांछा मनविषैं ।।१०।।

मण्डलमध्ये परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

समुच्चय पूजा

(त्रिभंगी छन्द)

यह धर्म क्षमावा मान गुमावा, सरल सुभावा सतिवानी ।
शुचि भाव करावा संजम लावा, तप करवावा अधिकानी ।।
शुचि त्याग बतावै नगन पुजावै, शील बड़ावै शिवदाई ।
यह धर्म हमारा थाप करारा, पूजन धारा सिरनाई ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

(मणुयणाणंदकी चाल)

क्षीरसागर तना नीर शुभ लाइये ।
कनक झारी विषैं धार गुण गाइये ।।
मरण उतपति नहीं होय ता फल सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर संग अगुरु चन्दन सु घिस लायजी ।
सुभग पातर विषै धारि थुति गायजी ।।
जगत तप तासु फल तुरत नाशै सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

लेइ अक्षत भले मुक्तिफल से कहे ।
ऊजले अखण्ड सुभग स्वर्ण पातर लहे ।।
अखयपद पावनै आप मनमें सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल कञ्चनवरन कलपतरुके भले ।
गंध जुत रंग शुभ लेइ निज कर चले ।।
माल तिन गूंथि कामबाण नाशक सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुगम नैवेद्य मोदक घने लाइये ।
विविध स्वादमय सु धरि भक्ति उर भाइये ।।
भूख-दुखहर्ण स्वर्ण-पात्र धरिके सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप मणि रतनमय और घृतमय सही ।
धारि कनक थालमें सु आरति जु करि लही ।।
धर्मज्योति मोह अंधकार नाशिका सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप दश अंग मय लायकर सारजी ।
अगनि संग खेवहूँ सुभक्ति उर धारजी ।
कर्म छयकार भव वास नाशन सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लौंग खारिक सुनारिकेल सुक्खकारजी ।
और बादाम पुंगी फलादि सार जी ।।
लेई निज हाथ में सुभक्ति धरिके सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गंध अक्षत सु फूल चरु सोई जी ।
दीप अरु धूप फल अरघ संजोइ जी ।।
पुरट थाली विषैं भक्ति करिके सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्यःऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म भवकूप तैं काढ़ने को रसी ।
भव उदधि पार करतार नवका इसी ।।

धर्म सुख दैन जिमि तात माता सही ।
जानि इमि धर्म दशधा जजौं शिवमही ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला

(दोहा)

दश वृष रतन मिलायके, माल करै भवि जोय ।
धरै आपने उर विषैं, ता सम अवर न कोय ।।१।।

(वेसरी छन्द)

दशलक्षण वृष शिवमग दीवा, धर्म थकी सुख पावै जीवा ।
मुकति दीप पहुँचावन जावा, ये दश धर्म जजौं जुत भावा ।।२।।

दशविधि धरम धरै जो कोई, करम नाशि फिरि दुख नहिं होई ।
धरम जु साधन और न कोई, यों दश धर्म जजौं मद खोई ।।३।।

धरम जीव का पालनहारा, धर्म मान का खण्डन वारा ।
धर्म थकी जावै कुटिलाई, इमि दश धर्म जजौं चितलाई ।।४।।

सांच वचन सम धरम न जानौ, धर्म भाव निर्मल पहिचानौ ।
धर्म जीव रख इन्द्रिय जीतं, इमि दश धर्म जजौं करि प्रीतं ।।५।।

तप ही सर्व धर्मका मूला, त्याग धरमतैं क्षय अघ थूला ।
धर्म नगन सम और न कोई, इनि दश धर्म जजौं मद कोई ।।६।।

नारी त्याग धरम शिवदाई, ये दश धरम जगतमैं भाई ।
जो दशलक्षण मनमें आनै, सो भव तप हरि शिवपद ठानै ।।७।।

दशलक्षण व्रत इण विधि कीजै, उत्कृष्टै दश वास करीजै ।
नातर बेले पारन भाई, तथा इकंतर वास कराई ।।८।।
शक्तिहीन ह्वै तो सुन मीता, दश एकंत करौ धरि प्रीता ।
व्रत दश वरस करै मन लाई, करु उद्यापन मन वच काई ।।९।।
नहिं उद्यापन शक्ति तुम्हारी, तौ दूनौ व्रत करु सुखकारी ।
पीछे यथाशक्ति खरचावै, पूजन धर्म उद्योत करावै ।।१०।।

(दोहा)

इत्यादिक विधि सहित जो, धर्म करै दश सार ।
पावै सुख मन भावनो, अनुक्रम ले भव पार ।।११।।

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षणधर्मेभ्य: पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

।। इति समुच्चय पूजा ।।

सहज सिद्धानंद.

卐

उत्तम क्षमा धर्म पूजा

(अडिल्ल)

जीव तिरस थावर जेते जगमें सही ।
देव नरक नर पशू चारि गति की मही ।।
तिन सब ऊपर दयाभाव उरमाहिं जी ।
सो है उत्तम क्षमा, थापि जजुं याहिं जी ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांग ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांग ! अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(पद्धड़ी छन्द)

जल गंग नदी को विमल सोइ, धरि रतन पयाले शुद्ध होइ ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

बावन चन्दन घसि नीर लाय, धरि कनक रकेबी जिन चढ़ाय ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।

अक्षत मुक्ताफल सम जु लाय, अति उज्वल नखशिख शुद्ध भाय ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

शुभ फूल कलपतरुके अनूप, करि माला सुभग सुगंध रूप ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

नाना रस पूरित चरु सम्हार, शुभ मोदक आदि अनेक धार ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

मणिदीपकसार बनाय लाय, धरि कनक थाल भरि भक्ति भाय ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।

ले धूप अगरुजा गंधकार, दुर्भाव हुताशन मांहि जार ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं ।

फल नारिकेल बादाम सोइ, पुंगीफल खारक भक्ति जोइ ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।

जल चन्दन अक्षत फूल लाय, चरु दीप धूप फल अरघ भाय ।
यह धरम छिमा उत्तम सुजान, मैं पूजों मनवच भक्ति आन ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं ।

अथ प्रत्येकार्घ्याणि

(अडिल्ल)

पाप प्रकृति कर जीव अशुभ बंधन कर्यो ।
थावर नामा कर्म उदय दुखको भर्यो ।।
पृथ्वी माहिं सु जाय सहै बहु अघ भला ।
तिन का रक्षण-भाव छमा उत्तम भला ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री पृथिवीकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

जे जलकायिक जीव ज्ञान विन दुख लहैं ।
इक इन्द्रियके द्वार अतुल विपदा सहैं ।।
तिनको दुखमय जानि मुनी करुणा करैं ।।
तसु प्रसादतैं झटिति मोक्ष-वनिता वरें ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जलकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं निर्व० ।

अगनिकाय धर जीव एक इन्द्रिय सही ।
नाना दुख तन सहैं जलैं सब जग मही ।।
इन पर करुणाभाव धरैं जे भवि सही ।
सो ही उत्तम क्षमा मोक्षदाता कही ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

पवन कायके जीव महा संकट सहैं ।
हाथ पांव मुख वचन थकी बाधा लहैं ।।
इन पर करुणाभाव जती धारैं सही ।
सो ही उत्तम क्षमा कही शिव की मही ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

हरित कायमें प्राणी अति वेदन लहै ।
छेदन भेदन कष्ट महा अघ फल सहै ।।
इन पर समताभाव सुखी इनको चहै ।
सो ही उत्तमक्षमा धारि मुनि शिव लहै ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिकपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

थावरके पन भेद पाप फलतैं बने ।
सूक्षम बादर भेद दोय यों जिन भने ।।
इनको दुखमय जानि दया मन लाय हैं ।
सो ही उत्तम छमा जजौं शिरनाय हैं ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मस्थूलपंचस्थावरपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

लट अरु जोंक गिंडोला इल्ली जानिये ।
कौड़ी शंख दुइन्द्रिय अति दुख थानिये ।।

इन पर करुणाभाव जती धारैं सही ।
सो ही उत्तम छमा जजौं शिव की मही ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

चींटी कुंथा खटमल वीछू दुख मही ।
तेइन्द्रिय परजाय पई घुण आदि ही ।।
इनको दुखमय जानि मुनी करुणा धरैं ।
सो ही उत्तम छमा जजौं सब अघ जरैं ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री त्रींन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

माखी मच्छड़ टीड़ी भंवरादिक सही ।
बर्र ततइया मकड़ी चतुरान्द्रिय कही ।।
इनको दुखिया देखि मुनी करुणा धरैं ।
सो ही उत्तम छमा जजौं वसुविधि जरैं ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री चतुरिन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

इन्द्रिय पांचों होय नहीं मन जो लहैं ।
ते जिय जानि असैनी अघफल अति दहैं ।।
इनको दुख भरिपूर जानि करुणा धरै ।
सो ही उत्तम छमा जजौं शिवथल धरै ।।१०।।

ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

नरक जीव अति दुखी पापफलतैं सही ।
छेदन भेदन पीर सहैं जाति ना कही ।।
इन पर करुणाभाव जती अति लाय हैं ।
सो ही उत्तम छमा जजौं सुखदाय हैं ।।११।।

ॐ ह्रीं नारकीजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

(गीता छन्द)

मनुष क्रोध रु मान माया, लोभवश दुखिया घने ।
बहु चाह पीड़त रागद्वेषी, अघ घनो उपजे तिने ।।
तिन देख यतिवरद या लावैं, महा दीनदयाल जी ।
सो धर्म उत्तम छमा निर्मल जजौं, भाग्य विशाल जी ।।१२।।

ॐ ह्रीं मनुष्यजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

परकार चारों देव गतिमें, जीव सुख राचै सही ।
लछि देखि परकी झुरै नित ही, मानते पीड़ा कही ।।
तिन देखि मुनि उर दया भावै, महा कोमल भावजी ।
सो धर्म उत्तम क्षमा पूजों, अर्घतैं कर चावजी ।।१३।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधदेवजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

(चौपाई)

थावर तिरस जीव सब जोई, चहुंगति करमनि के वशि होई ।
तिनको देखि दया उर लाई, सो उत्तम खम धर्म जजाई ।।१४।।

ॐ ह्रीं त्रसस्थावरसमस्तजीवपरिरक्षणरूपोत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं ।

जयमाला

(दोहा)

धर्म क्षमा उत्तम बड़ो, सब जीवन सुखदाय ।
जजैं जीव सो पुनि लहै, करै जु शिवपुर जाय ।।१।।

(वेसरी छन्द)

सब जीवनमें राग न दोषा, सो है क्षमा धरम निरदोषा ।
दुर्जन कृत उपसर्ग लहावै, ताहू पै समभाव रहावै ।।२।।

मुनिको वचन कहै दुखकारी, मरम छेद छेदै अघ धारी ।
मान खण्ड किरिया करवावै, तब मुनि क्षमा धर्म मन लावै ।।३।।
जो कोई दुष्ट मुनिनको मारै, तीक्ष्ण शस्त्र तैं करि परिहारै ।
बांधैं तनको खेद न पावै, तिन पर क्षमा धर्म मन लावै ।।४।।
अति दुखिया जियको ऋषि जानै, तब मुनि अनुकम्पा मन आनै ।
आपा परको हित उपजावै, तब मुनि क्षमा धरम मन लावै ।।५।।
उत्तम क्षमा धरम सुखदाई, क्षमा धरम सब जियका भाई ।
जब मुनि हू पै कष्ट जु आवै, तब मुनि क्षमा धर्म मन लावै ।।६।।
क्षमा धरमसी ढाल न होई, क्रोध समान प्रहार न कोई ।
क्षमा समान न बल अति पावै, तातें जती क्षमा वृष भावै ।।७।।
क्षमा धरम शिव राह बताई, क्षमा तात माता अरु भाई ।
जातै सिद्ध सुखनको पावै, ऐसी क्षमा मुनी मन लावै ।।८।।

(सोरठा)

क्षमा आभूषण सार, उरमें जो पहिरे सही ।
ते भवसागर पार, जजौं धर्म उत्तम क्षमा ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

।। इति उत्तमक्षमा धर्म पूजा ।।

उत्तम मार्दव धर्म पूजा

(पद्धड़ी छन्द)

मार्दव वृष भाव विचार सोइ, जहां मान भाव दीखे न कोइ ।
इस धारी मुनि शिवगामि जानि, मैं जजौं थापि मार्दव सुभानि ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(मणुयणानंद की चाल)

क्षीर सम नीर शुद्ध गाल करि लाइये ।
पात्र सुवरण विषैं धारि गुण गाइये ।।
जगत फिरनो मिटे तासु फल तैं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय जलं ।

स्वच्छ नीर संग चन्दनादि को मिलायजी ।
शुद्ध गंध युक्त भक्ति भावतैं चढ़ायजी ।
जगत आताप हर जानि ता फल सही ।
धरम मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय चन्दनं ।

अक्षतं समुज्वलं खंड विन जानिये ।
सुभग मोती जिसे थाल भरि आनिये ।।

ध्रौव्य फल दाय मन लाय ध्याऊं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय अक्षतान् ।

फूल कल्पवृक्षके गंध रंग सारजी ।
माल गूंथि शुद्ध भाव भक्ति कर धारजी ।
मदन मद हरन सुफल जानि यातैं सही ।
धरम मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय पुष्पं ।

सुभग सर शुद्ध नैवेद्य मन लाइये ।
मोदकादि शुद्ध भक्ति भावतें चढ़ाइये ।।
धारि स्वर्णपात्र शुद्ध मन बचन तन सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय नैवेद्यं ।

दीप रतनन मयी नाश तमको करा ।
कनक पातर विषैं भक्तिभाव तैं धरा ।
नाश अज्ञान ह्वै तासु फल तैं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय दीपं ।

धूप दश गंध शुभ लेइ मन मानिये ।
अगर चंदन सबै मेलि शुभ ठानिये ।।
अग्नि संग खेइये कर्म जालन सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय धूपं ।

श्रीफलादि लौंग पुंगीफलादि जानिये ।
शुद्ध बादाम खारक भले आनिये ।।
सिद्ध थानक लहै तासु फलतैं सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय फलं ।

नीर चन्दन अखित पुष्प चरु दीप जी ।
धूप फल अर्घ कर भाव शुद्ध टीप जी ।।
लोक में फिरन, तन धरन मिटि है सही ।
धर्म मार्दव जजौं शुद्ध शिवदा मही ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगायार्घं ।

अथ प्रत्येकार्घ्याणि

(चाल--मणुयणानंद की)

देव वीतराग सर्वज्ञ तारक सही ।
दोष अष्टादशों तासु माहीं नहीं ।।
नमत तिन पद करै धर्म मार्दव कह्यो ।
सो जजौं चारि गति माहिं भरमन दह्यो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

वीतराग देव कही वानी सो धर्म है ।
ता सुनै जीव निज हरै भाव मर्म है ।।
मन वचन काय श्रुतपाद सिरनाय है ।
सो जजों धर्म मार्दव सु शिवदाय है ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्मपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

धर्म को सेय तप लेय कर्म जार जी ।
भये सिद्धदेव तन रहित सुखकार जी ।।
लेय इन नाम मन वचन शिर नाय है ।
सो जजौं धर्म मार्दव सु शिवदाय है ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

धारि छत्तीस गुण सूरि सुखदाय जी ।
धर्म तप भावसों गुप्ति धरि भाय जी ।।
मान तजि नमन इन पद विषै लाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

धारि गुण पांच अरु वीस उवझाय जी ।
और भी अनेक गुण पास तिन थाय जी ।।
मान तजि इन चरण कायको नायवो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइवो ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

क्षेत्र अतिशय तहाँ धर्म को धाय है ।
नमन बहु जिय करें देव गुण गाय है ।।
मान तजि क्षेत्र शुभ जानि शिर नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्रपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

देव जिनकी सु प्रतिमा अकृत्रिम इसी ।
रूप द्युति ध्यान मुद्रा कही जिन जिसी ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिमजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरग थानक विषैं देव जिनके सही ।
रतनमय जैन बिम्ब विगर किये हैं यही ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्द्धलोकसम्बन्धीजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

ज्योतिषी व्यंतरा थान मध्यलोक जी ।
विन किये चैत्य जिन कहे अघ रोक जी ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोकसम्बन्धीजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

भवन देवनि विषैं बहुत जिनराय जी ।
बिम्ब अकृत्रिम कहे सेय तसु पाय जी ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोकसम्बन्धीजिनचैत्यपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

आदि इन पूज्य थानक बहुत है सही ।
सिद्धक्षेत्र मोक्ष फलदायक तीरथ मही ।।
मान तजि शीश इन चरण को सु नाइयो ।
धर्म मार्दव सु तासु फल मोक्ष पाइयो ।।११।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रपदनमनमार्दवधर्मांगाय अर्घं ।

जयमाला

(वेसरी छन्द)

मार्दव धर्म मान को खोवै, ता फल जगत पूज्य पद होवै ।
मार्दव सकल दोष निरवारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।१।।
मार्दव धरम इन्द्र सुर पूजैं, मार्दव धरम भजैं अघ धूजैं ।
मार्दव मान हरै सुख कारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।२।।
मार्दव धरम महानर ध्यावै, मार्दव धरम मानि नहिं पावै ।
यह मार्दव वृष शिव थल धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।३।।
मार्दव सब को राखै माना, मार्दव सब धरमनि में दाना ।
मार्दव धरम जीव जे धारैं, ता फल आप तरै अनि तारैं ।।४।।
मार्दव धरम सुरग सुख केरा, उपद्रव नाशि हरै भव फेरा ।
मार्दव उत्तम पुरुष सु धारैं, ता फल आप तरै अनि तारै ।।५।।
मार्दव मोक्षमार्ग को दाता, मार्दव धर्म सकल जग त्राता ।
मार्दव वृष गुणवंता धारैं, ता फल आप तरै अनि तारैं ।।६।।
मार्दव धरम कलपतरु भाई, मार्दव मनवांछित फलदाई ।
मार्दव धरम मुकुट जो धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।७।।

मार्दव धरम कनकमें मीना, मार्दव धारि सकैं न कमीना ।
मान मार मार्दव वृष धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।८।।
मार्दव वृष सब धर्म प्रधाना, मार्दव मोह मल्लको हाना ।
मार्दव माल पुरुष उर धारै, ता फल आप तरै अनि तारै ।।९।।

(दोहा)

मान मार मार्दव करै, हरै पाप मल सोय ।
जगत छुड़ावै शिव करै, ते मो रक्षक होय ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम आर्जव धर्म पूजा

(वेसरी छन्द)

जग परपंच रहित जे भावा, सरल चित्त सबतैं निरदावा ।
तिनको आरजव भाव सु कहिये, सो ह्यां थापि पूजफल लहिये ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(वेसरी छन्द)

क्षीर समुद का उज्वल नीरा, कनक पियाले धर अति धीरा ।
जरा रोग नाशन को भाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

चन्दन बावन जल घसि लाया, कनक पात्र में धरि उमगाया ।
शोकानल तप नाशन भाई, आरजव धर्म जजौं शिर नाई ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।

अक्षत मुक्ताफलसे जानो, उज्वल खण्ड विवर्जित आनो ।
क्षय नहिं होय इसो पद दाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् ।

फूल सुगंध कल्पद्रुम लाया, तथा सुवर्ण रजतमय भाया ।
तिनकी माल गूंथि करि लाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

नाना रस नैवेद्य करावै, मोदक आदि भक्ति तैं लावै ।
भूख व्याधि नाशन को भाई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

दीपक रतन थल धरि लीजै, मन वच काय शुद्ध करि लीजै ।
घाति अज्ञान ज्ञान दर्शाई, आरजव धर्म जजौं शिर नाई ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।

धूप अगरजा चन्दन भीनी, गंध सहित निज करमें लीनी ।
कर्मदहन को अगनि जराई, आरजव भाव नमौं शिर नाई ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं ।

ले नारियल बादाम सुपारी, खारिक लोंग आदि हितकारी ।
सिद्धलोक वांछा मनमांही, आरजव धर्म जजौं शिर नाई ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।

जल चन्दन अक्षत कामारी, चरु दीपक फल धूप विथारी ।
अर्घ लेय मन वच तन भाई, आर्जव धर्म जजौं शिर नाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री आर्जवधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घं ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(वेसरी छन्द)

गुण छ्यालीय जहां प्रभु मेरा, अष्टादश तहां दोष न हेरा ।
तिन पद सरल भाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।।

ॐ ह्रीं श्री छयालीसगुणसहितजिनचरणनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

मुक्त जीव अरहत थुति कीजे, मन वच कुटिल भाव तजि दीजे ।
तिन पद सरल भाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।२ ।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तजीवअरहन्तपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

कर्म काटि शिवलोक सिधारे, सिद्ध सु देव हरो अघ सारे ।
तिन पद सरल भाव शिव नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।३

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

सिद्धशिला पैंतालिस लाखा, योजन विस्तृत जिन वच भाषा ।
तत्र स्थित आतम शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।४ ।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशिलास्थितमुक्तात्मपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

गुण छत्तीस सु धारक सूरा, आचारज सब गुण भरपूरा ।
तिन पद सरल भाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।५

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

आचारज सब गुण भरपूरा, आचारादि गुणनयुत दूरा ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।६

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदपरोक्षनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

गुण पचीस उवझाय सु माहीं, ग्यारह अंग चौदह पुरवाहीं ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।७

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

बहु गुण धर उवझाय सु जानौ, दूरहितैं तिन को चित आनो ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।८

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदपरोक्षनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

वीस आठ गुण साधन साधा, सो नहिं लहै जगत की बाधा ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।९।

ॐ ह्रीं श्री साधुपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

दूरहि तैं मुनि गुण जु चितारैं, मन वच काया निज वश धारै ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।१०

ॐ ह्रीं श्री साधुपदपरोक्षनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

वरण विहीन सु जिनवर वानी, तिन को सुनि सुख पावै प्रानी ।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।११

ॐ ह्रीं श्री जिनधुनिनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

अतिशय क्षेत्र सु तीरथ ठामा, यात्रीगण कहे पूरै कामा ।
तिस थल सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै ।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्रपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

शिखरसम्मेद आदि सिद्ध थाना, तहं मुनि लिय शिव कर्म नशाना।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै।
१ ३

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

विगर किये जिनबिम्ब अनूपा, लक्षण चिह्न जानि जिनरूपा।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिर धावै।१४

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिमजिनचैत्यपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

कृत्रिम जे जिनबिम्ब विराजैं, विनय सहित पुन दायक छाजैं।
तिन पद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै।१५

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमजिनचैत्यपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

इत्यादिक बहु क्षेत्र सु थाना, पूजनीक तीरथ अघ हाना।
जिनपद सरलभाव शिर नावै, सो आरजव वृष जजि शिव धावै।१६

ॐ ह्रीं श्री सकलपूज्यस्थानकपदनमनार्जवधर्मांगायार्घं ।

अथ जयमाला

(दोहा)

सरल भाव सारै सरस, सुरनर पूज्य महान।
तातैं तजनी कुटिलता, आरजव भाव लहान।।१।।

(वेसरी छन्द)

सरलभाव समता उर आनै, सरलभाव सब औगुन भानै।
आरजव भाव धरै जे जीवा, तिनने जिनवानी रस पीवा।।२।।
आरजव भाव धरैं जे प्राणी, तिनके होनहार शिवरानी।

दोष भाव तिनतें नहिं छीवा, आरजव भाव धरैं जे जीवा ।।३।।
आरजव भाव अमरपद द्यावै, आरजव में औगुन नहिं पावै ।
कुटिलभाव विष जिन नहिं पीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।४।
।
आरतिको आरजव ही खोवै, आरजवभाव पाप मल धोवै ।
रोग शोक ताको नहिं छीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।५।
आरजव शुद्धभाव जिन पाया, तिनने लहि पुन पाप गमाया ।
अनुभव आनंद तानें छीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।६।।
आर्जव भाव दोष सब खोवै, आरजव कर्म कालिमा धोवै ।
शुद्ध स्वभाव सु तानै कीया, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।७।।
आरजवभाव सकल को प्यारा, आरजवभाव भ्रमणतैं न्यारा ।
ताकों और रुचे न मतीवा, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।८।।
आरजव सुर शिवके सुख ठाने, आरजवभाव पूर्व अघ भाने ।
अद्‌भुत आपापर भिन कीया, आरजवभाव धरैं जे जीवा ।।९।।

(दोहा)

अन्तरंग निरदोषके, प्रगटै आरजव भाव ।
जाके फल मरनौ मिटै, छुटे कर्मको दाव ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

* इति उत्तम आर्जव धर्म पूजा समाप्त *

उत्तम सत्य धर्म पूजा

(अडिल्ल छन्द)

सत्य सरीसो धर्म जगत में है नहीं ।
सत्य धरम परभाव लहै शिवकी मही ।
तातैं भवदुख हरण सत्य वृष भाइये ।
यहाँ थापि में जजौं सत्य मन लाइये ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्यधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(त्रिभंगी छन्द)

जो झूठ विनाशै जग विसवासै, पुन्य प्रकाशै हितदानी ।
सब दोष निवारै समता धारै, शिवपुर कारै गुण थानी ।।
जग आदरकारी मोह निवारी, आनंदधारी जग मानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, जल लै परमा जजि जानौ ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत सौ वृष नाहीं या जगमाहीं, पूज्य कहाहीं शिव थानी ।
सब औगुण धोवै पाप विलोवै, धर्म मिलावे दुख हानी ।।
पावत शिवनारी मुनिजन प्यारी, सुख करतारी भवि मानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, गंध लै परमा जजि जानौ ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

या सत्य समानौ रतन न आनौ, सम्यक दानौ शिवकारी ।
भवदधि को नावा अशुभ गमावा, सरल स्वभावा दुखहारी ।।
सिधलोक नसैनी शिख सुख दैनी, ध्यावत जैनी अमलानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, अक्षत परमा जजि जानौ ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सत सौ नहिं मिंता मेटन चिंता, अघ अरिहंता जसदाई ।
सत जगत पियारो भव उद्धारो, दुखजल तारो थुति गाई ।।
याको मुनि ध्यावें शिवसुख पावें, पाप गमावें भव हानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, पुष्पं परमा जजि जानौ ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत् धर्म सु पूजे सब अघ धूजे, शिवमग सूजे अधिकाई ।
यातैं वृष सारा काज संबारा, अशुभ विहारा सिधिदाई ।।
सत सारा नीका सुखदा जी का, शिवमग टीका शुभ आनौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, ले चरु परमा जजि जानौ ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत धर्म उजाला जगका पाला, विभ्रम टाला धर्म करा ।
यह ज्ञान उजालै अशुभ सु टालै, संजम पालै झूठ हरा ।।
सत प्रीति उपावे वैर गमावे, जो थुति लावे उर ज्ञानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, दीपक परमा जजि जानौ ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

सत धर्म प्रभावे मुनि शिव जावे, जगजस गावे थुति लाई ।
सत धर्म जु भूला अघक्षय थूला, झूठ कुसूला दह भाई ।।

सत धर्म अनूपा शुभ रस कूपा, पुण्य स्वरूपा मग मानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, धूप जु परमा जजि जानौ ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

सत धर्म अभ्यासौ शिव थल वासौ, पाप विनासौ हितधारी ।
गुण ज्ञान बढ़ावे आदर ल्यावे, पुण्य उपावे सत भारी ।।
जगमें अति नीका बंधूजी का, शिवतिय पीका गुण थानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, ले फल परमा जजि जानौ ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति ।

जल चन्दन नीका अक्षत ठीका, फूल चुनी का माल करौ ।
चरु दीप सु लाया धूप बनाया, श्रीफल मया अर्घ धरौ ।
उर भक्ति बढ़ाई मुख थुति गाई, सत सब भाई पहिचानौ ।
ऐसो सत धर्मा काटत कर्मा, अर्घ परमा जजि जानौ ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री सत्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(चौपाई)

क्रोध सहित जिय सत नहिं कहै, झूठ वचन तैं अघ शिर लहै ।
क्रोध रहित जिन वचन प्रमानि, सो सत धर्म चयो जिनवानी ।।१।।

ॐ ह्रीं क्रोधातिचाररहितसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोभ सहित जिय झूठ वखानि, सांच धर्म ताकौ नहिं मानि ।
लोभ रहित सत धर्म सुभाय, सो सत धर्म जजौं थुति गाय ।।२।।

ॐ ह्रीं लोभातिचाररहितसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सांच न कहै भीतियुत जीव, बोले असत सु वचन सदीव ।
भयतैं रहित सत्य वच भाख, सो सत धर्म करौ थुति लाख ।।३।।

ॐ ह्रीं भयातिचाररहितसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

हास्य सत्यको नाशनहार, तातैं सहै महा दुख भार ।
हास्य रहित सत धर्म कहाय, सो सत धर्म जजौ थुति गाय ।।४।।

ॐ ह्रीं हास्याचाररहितसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन आज्ञा विन भाखै वैन, पूर्वापर वच ठीक कहै न ।
ऐसे दोष रहित सत भाय, सो सत धर्म जजौं थुति गाय ।।५।।

ॐ ह्रीं जिनाज्ञोल्लंघनातिचाररहितसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्व० ।

(गीता छन्द)

जो देश में जिस वस्तु को तिस मानिये सो सत सही ।
जिमि भात को गुजरात मालवदेश में चोखा कही ।।
करनाट में कूलू कहै द्राविड़में चौरु बखानिये ।
इमि जानि जनपद सत्यको जजि हर्ष उर में आनिये ।।६।।

ॐ ह्रीं जनपदसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अडिल्ल छन्द)

बहु नर ताको कहें तिसो ही मानिये ।
रंक नाम लक्ष्मीधर जाहि बखानिये ।।
तौ यह रूढ़ी नाम सत्य संवृत कही ।
या नयतैं सत जानि जजौं सत वृष सही ।।७।।

ॐ ह्रीं संवृतसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

काहू नर आकार तथा पशु के सही ।
चित्र काष्टमें थापि नाम नर पशु कही ।।
यह थापन सत भेद शास्त्र में गाइयो ।
ताकों सत वृष जानि जजौं मन लाइयो ।।८।।

ॐ ह्रीं स्थापनसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाको जगमें नाम प्रसिद्ध बखानिये ।
सोई ताको नाम सत्य सो मानिये ।।
नाम सत्य सो जानि वानि जिन इम कही ।
ताकों मन वच काय जजौं शुभ सुखमही ।।९।।

ॐ ह्रीं नामसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पीत श्याम अरु रक्त श्वेत गोरा सही ।
रूपवान इत्यादि अंग बहुतैं कही ।।
रूप सत्य सो जानि कह्यो जिनवानी जी ।
ऐसो सत्य सु जानि जजौं सुखदान जी ।।१०।।

ॐ ह्रीं रूपसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कही वस्तु यह यातैं छोटी है सही ।
यातैं है यह बड़ी अपेक्षा इमि कही ।।
याको नाम प्रतीति सत्य सो जानिये ।
ताकों भी मैं जजौं भक्ति उर आनिये ।।११।।

ॐ ह्रीं अपेक्षासत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो नरपति को पुत्र ताहि राजा कहै ।
सो नैगमनय जानि सत्य तातैं यहै ।।

यही सत्य व्यौहार जिनेश्वर धुनि कही ।
मैं जजिहौं कर भक्ति नाय मस्तक मही ।।१२।।

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शक्ति इन्द्रमें इसी लोक उलटो करै ।
सो तो लोक अनादि उलटि कैसे धरै ।।
पै यह शक्ति अपेक्षा वचन प्रमान है ।
यह संभावन सत्य जजौं क्षिति आन है ।।१३।।

ॐ ह्रीं संभावनासत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीव अनंत अनादि नजर आवै नहीं ।
द्रव्य अमूर्ती पांच नरक सुर की मही ।।
ये नहिं दीखैं नयन सूत्र सों जानिये ।
भाव सत्य सो जानि जजौं मन आनिये ।।१४।।

ॐ ह्रीं भावसत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

किसी वस्तु की उपमा जाको लाइये ।
ज्यों दानी नर देखि कलपद्रुम गाइये ।।
याको उपमा सत्य नाम जानौं सही ।
सो मैं पूजौ भक्ति नाय मस्तक मही ।।१५।।

ॐ ह्रीं उपमासत्यधर्मांगायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इत्यादिक बहु भेद सत्यके जानिये ।
कहे देव जिनराज आपनी वानिये ।।
सो मैं मन वच काय शुद्ध थुति गाइ जी ।
पूजौं सत्य सु धर्म अरथ कर लाइ जी ।।१६।।

ॐ ह्रीं सत्यधर्मांगायार्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(वेसरी छन्द)

सत्य धरम जग पूज्य बताया, सत्य श्रेष्ठ व्रत जिन धुनि गाया ।
सत्य धरम भवदधि को नावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।१।।
सत्य धरम वर अंग प्रवीना, सत्य धरम ज्यौं कञ्चन मीना ।
सत्य धर्मका सबको चावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।२।।
सत्य धरमका राखन हारा, सत्य धर्म मुनिजनको प्यारा ।
सत्य शिरोमणि धर्म कहावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।३।।
सत्य समान और नहिं मिंता, सत्य धर्म मेटे भव चिंता ।
सत्य करै अघतैं निरदावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।४।।
सत्य धर्म अपयश खयकारी, सत्य सुरक्षा करै हमारी ।
सतहीका सुरनर जस गावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।५।।
सत्य सहित सब सार्थिक धर्मा, तासौं कटैं चिरंतन कर्मा ।
सत्य समान और नहिं ठावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।६।।
सत्य जगत में पूजा पावै, सत्य धरम शिव राह बतावै ।
सत्य जजौं सति धर्म लहावा, सो सत धर्म जजौं शुद्ध भावा ।।७।।
धर्म सरोवरमें सत नीरा, सत्य धर्म खोवै सब पीरा ।
सत्य धर्म सो कुगति न पावा, सो सत धर्म जजौं शुध भावा ।।८।।

दोहा-- सत सागर में जे रमें, ते वृषनायक जोय ।
जजैं धर्म सत को सही, मन वच काया सोय ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्मांगाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

* इति उत्तमसत्यधर्म पूजा *

उत्तम शौच धर्म पूजा

(वेसरी छन्द)

शौच धर्म पर चाह निवारै, तनतै हू ममता निरवारै ।
जग वाँछा तजि निर्मल भावा, शौच धर्म पूजौं करि चावा ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांगाय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(पद्धड़ी छन्द)

जल क्षीरसमुद्र को सुभग लाय, धरि कनक पात्रमें भक्ति भाय ।
तन धरन मिटै यह फल सुजान, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।२।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति० ।

घसि बावन चन्दन नीर आन, अलि गुञ्जत मानों करत गान ।
धरि कनक पियाले भक्ति आन, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।३।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति० ।

उज्वल अखण्ड शुभ गंध दाय, अक्षत अनूप लखि शशि लजाय ।
कन पात्र विषै धरि भक्ति आन, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।४।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

ले फूल कल्पद्रुम के मनोग, आसक्त भ्रमर थित करत भोग ।
तिन गूंथि माल उर भक्ति ठान, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।५।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ मोदक आदि अनेक भाय, रसनारंजन नैवेद्य लाय ।
धरि पुरट थाल मैं भक्ति ठान, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ।

मणि दीपक वा घृतमय संजोय, मनु निबिड मोहतम नाश होय ।
अरु ज्ञान प्रकाश करे महान, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ धूप अरगजा गंध लाय, कन धूपायन ताकों खिवाय ।
मिस धूम मनों वसु विधि उडान, मैं शौच धरम जजि हर्ष आन ।८।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले फल बदाम खारक अनूप, अरु पुंगीफल आदिक स्वरूप ।
धरि भक्ति भाव मनमांहि सोय, मैं शौच जजौ शुध भाव होय ।९।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत वर कुसुम होय, चरु द्वीप धूप फल सुभग जोय ।
कर अरघ धरों कन पात्र लाय, मैं जजौं शौच वर भक्ति भाय ।१०

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगायार्घं अनर्घपद प्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(चाल--मुणयणानंद की)

देव के सकल सुख जानि चंचलमयी ।
आयु पल्य सागर तनी तुरत क्षय गयी ।।
जान सब अथिर उर भाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१।।

ॐ ह्रीं देवसुखवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

चाह चक्री तने सुखन की उर नहीं ।
सहस छिनवै तिया और षट् खण्ड मही ।।
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।२।।

ॐ ह्रीं चक्रियपदभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

खण्ड तीन को जु राज नारि बहु जानिये ।
चारि विध सैन सुर नर खगादि मानिये ।।
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।३।।

ॐ ह्रीं नारायणपदभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

कामदेव को सुरूप देखि देव मन हरे ।
भोगवांछित सकल देव सेवा करै ।।
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।४।।

ॐ ह्रीं कामदेवपदभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

आठ परकार सपरस विषैं जानिये ।
द्रव्य क्षेत्र काल अनुसार भाव मानिये ।।
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।५।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

पांच परकार रस जानि शुभ सार जी ।
भोग वांछै सभी जगत दुखकार जी ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।६।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

घ्राण इन्द्रियतने गंध दो हैं सही ।
ताहि अनुकूल पाय जीव साता लही ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।७।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

चक्षु इन्द्रियतने पांच रूप भोग हैं ।
ताहि चाहें अमर नाहिं तन रोग हैं ।।
जानि सब अथिर उर भाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।८।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

राग संगीत इन आदि सुर साजिये ।
सप्त स्वरभेद कर्ण भोग मन राजिये ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।९।।

ॐ ह्रीं कार्णेन्द्रियभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

भोग वांछित घने चित्त आधार जी ।
ताहि सेय सेय जीव सुख लहैं अपार जी ।।

जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१०।।

ॐ ह्रीं मनवांछितभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

तन अशुभ आपको सु चाम मय जानिये ।
सप्त मल धात पूरित सु घिन आनिये ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।११।।

ॐ ह्रीं तनसम्बन्धिभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

रतन नवधादि भरपूर घर में सही ।
कोटि नित दान देते सु क्षय हो नहीं ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१२।।

ॐ ह्रीं धनवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

रूपमें शची समान नारि घर में घनी ।
शीश आज्ञा धरै प्रीति रसमें सनी ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१३।।

ॐ ह्रीं वनिताभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

कामदेवके समान पुत्र रूप धार जी ।
विनयवान सर्व बलवंत तेज सार जी ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१४।।

ॐ ह्रीं पुत्रभोगवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

भ्रात बहु विनय जुत आनि पालक सही ।
संग तिन भोग भोगि जीव साता लही ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१५।।

ॐ ह्रीं भ्रातृसुखवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

मन्त्र दाता विपति मांहि मित्र सार जी ।
प्रेम अन्तरंग धारि नित्य रहें लार जी ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१६।।

ॐ ह्रीं मित्रानुबन्धवांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

मित्र तिय पुत्र सब घरतने दासिया ।
आदि परिजन सकल और घरवासिया ।।
जानि सब अथिर उरभाव निर्मल करै ।
पूजि शौच धर्म को जु शौच थानक धरै ।।१७।।

ॐ ह्रीं सकलपरिजनानुकारित्ववांछाविहीनशौचधर्मांगायार्घं ।

अथ जयमाला

(दोहा)

शौच सकल उर सुख करै, हरै लोभ मल सोइ ।
मोक्ष धरै मरनो टरै, ताहि जजैं शिव होइ ।।१।।

(वेसरी छन्द)

शौच भाव तैं पुण्य बड़ोई, कटै पाप जग में जस होई ।
शौच भाव संतन को प्यारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ।।२।।
शौच भाव पर चाह निवारै, शौच भाव दुख शोक विडारै ।
शौच सरव कों बड़ा सहारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ।।३।।
शौच सांच के बड़ा सनेहा, शौच मुनिव्रत की इक देहा ।
शौच भाव मंगल करतारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ।।४।।
शौच भाव में नाहिं कषाया, शौच भाव सब जग को भाया ।
शौच धर्म का शरण गहारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ।।५।।
शौच धर्म को मुनिगण सेवैं, ता फल स्वयं सिद्ध थल लेवैं ।
शौच धर्म समतारस धारा, जजौं शौच यह धर्म हमारा ।।६।।
शौच समान और नहिं मिंता, शौच भाव टारै सब चिंता ।
शौच सदा सब जिय का प्यारा, शौच जजौं यह धर्म हमारा ।।७।।

(दोहा)

शौच सार संसार में, करै पवित्र जु भाव ।
तातैं धारो शौच को, भलौ मिलो यह दाव ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

* इति उत्तम शौचधर्म पूजा *

उत्तम संयम धर्म पूजा

(अडिल्ल छन्द)

संजम धर्म अनूप दोय विधि जानिये ।
एक रक्षा षट् काय दया उर आनिये ।।
मन इन्द्रिय वश करै दूसरो संयमा ।
सो मैं पूजौं थापि लहौं उत्तम रमा ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(वेसरी छन्द)

निर्मल नीर भाव कर भीजै, मन मनोग्य वासन धरि लीजै ।
जिनको जन्म मरण गद जावे, जो संयम वृष जजि शिर नावे ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

चन्दन शीतल भावन भाया, तापर मन भंवरा जु लुभाया ।।
जग आताप तासु नशि जावे, सो संयम वृष जजि शिर नावे ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

शाल अखण्ड अखत ले भाई, शुभ परिणति भाजन भरवाई ।
जो अखण्ड थानक ले धावे, सो संयम वृष जजि शिर नावे ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अक्षयपदाप्राप्तयेऽक्षतान् निर्व० ।

फूल प्रफुल्लित भाव सु लीजे, भक्ति तारमें माल करीजे ।
मदन बाण हरिसो बल पावे, सो संयम वृष जजि शिर नावे ।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

भाव अवांछित कर नैवेद्यं, नाना रस मय ले निरखेद्यं ।
भूख नाशि चित साता पावै, जो संयम वृष जजि शिर नावै ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।

सम्यग्ज्ञान दीप करि भाई, शुद्ध भाव भाजन धरवाई ।
ताके फल अज्ञान मिटावे, जो संयम वृष जजि शिर नावे ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ।

कर्म आठ मय धूप करीजे, धरम सु ध्यान अगनि खेवीजे ।
ता फल दुष्ट कर्म नशि जावे, जो संयम वृष जजि शिर नावे ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ।

उत्तम परिणति कौ फल कीजे, शुद्ध भाव कन थान धरीजे ।
तातें मनवांछित फल पावे, जो संयम वृष जजि शिर नावे ।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ।

आठों द्रव्य अमोलिक जानी, प्रासुक भाव सहित हित दानी ।
पद आनर्घ्य तासु फल पावे, जो संयम वृष जजि शिर नावे ।१०।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(चौपाई छन्द)

ताल कूप खाई न खुदाय, भूमिकाय तब दया पलाय ।
पृथविकाय की रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।१।।

ॐ ह्रीं पृथिवीकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

अनगालो जल वरतैं नाहिं, नदी तलाब फुडावै नाहिं ।
जलकायिक जिय रक्षा करै, संयमवृष जजि शिव-तिय वरै ।।२।।

ॐ ह्रीं जलकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

अगनि जलावन काज न करै, नाहिं बुझावै करुणा धरै ।
अगनिकाय जिय रक्षा होय, संमय धर्म जजौं शुचि होय ।।३।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

पवनकाय की रक्षा सार, पंखा आदि काज नहिं धार ।
पवनकाय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।४।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

फूल पात तरु तोड़ै नाहिं, वन बागादि लगावै नाहिं ।
हरितकाय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।५।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

इल्ली जोंक गिडौला जान, बाला आदि जीव पहिचान ।
वे इन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौ मद खोय ।।६।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

चीटी कुन्थुआ खटमल लीक, जुआं तिबूला जिय करि ठीक ।
ते इन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।७।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

माखी भवरा टीडी जान, मच्छर आदि जीव पहिचान ।
चउ इन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।८।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

जीव असैनी बहुत प्रकार, जलचर सर्प आदि निरधार ।
पंचेन्द्रिय जिय रक्षा होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।९।।

ॐ ह्रीं असंज्ञिपंचेन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

नर सुर नारिक सब जिय संज्ञि, तिर्यंचगतिमें संज्ञि असंज्ञि ।
संज्ञी जिय की रक्षा होय, संयम धर्म जजौ मद खोय ।।१०।।

ॐ ह्रीं संज्ञिपंचेन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

सपरस इन्द्रिय विषम निवार, वीतरागता बरतै सार ।
शीत उसन उर चाह न होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।११।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

रसनेन्द्रिय पांच भट जान, तिन वश भये सकल गुण हान ।
रसनेन्द्रिय के वश नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।१२।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

घ्राणेन्द्रिय के भट दुइ जान, तिन प्रसाद जिय दु:ख लहान ।
घ्राणेन्द्रिय के वश नहिं होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।१३।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

चक्षु विषय भट जानों पांच, ते दुख देय सकल जिय सांच ।
चक्षु अक्ष के वश नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।१४।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

कर्णेन्द्रिय शुभाशुभ वैन, ता वश होंय सुरासुर ऐन ।
शब्द शुभाशुभ वश नहिं होय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।१५।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

मन चंचल कपि की गति जिसौ, ताके वश जगजिय दुख फंसौ ।
मनके वश कबहूँ नहिं होय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।१६।।

ॐ ह्रीं मनोविषयवर्जनरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

सब जियमें धरि समताभाव, तप संयम करिवे को चाव ।
आरत रौद्र भाव नहिं होय, संयम भाव जजौं शुचि होय ।।१७।।

ॐ ह्रीं सामायिकरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

जो प्रमादवश संयम जाय, प्रायश्चित ले पुनि थिर थाय ।
छेदोथापन नामा सोय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।१८।।

ॐ ह्रीं छेदोपस्थापनारूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

दोय कोश नित गमन कराय, तन निहार नहिं बहु रिध पाय ।
सो परिहारविशुद्धी जोय, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।१९।।

ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धिरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

सकल कषाय नाश ह्वै जाय, नाम मात्र कछु लोभ रहाय ।
सूक्षम सांपराय है सोय, संयम धर्म जजौं मद खोय ।।२०।।

ॐ ह्रीं सूक्षमसांपरायरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

सकल मोह नाशे जिस काल, या उपशमै मोह जंजाल ।
जथारथवाद में रहे न मोह, संयम धर्म जजौं शुचि होय ।।२१।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरूपसंयमधर्मांगायार्घं ।

(अडिल्ल)

इस प्रकार बहु विधि को संयम जानिये ।
शिव सुखदायक होय दया की खानिये ।।

पूरण मुनि के होय धर्म हितदाय जी ।
ताहि जजौं मैं अर्घ थकी जश गाय जी ।।२२।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयमधर्मांगाय महार्घं ।

जयमाला

(वेसरी छन्द)

संयम सार जगतमें भाई, संयमतैं जिय शिव सुख पाई ।
संयम सब का राखनहारा, संयम है शिरताज हमारा ।।१।।
संयम सकल जीव सुखदाई, संयम सकल जीव बड़भाई ।
संयम जगत गुरुनि को प्यारा, संयम है शिरताज हमारा ।।२।।
पूरण संयम मुनि जग पावै, संयम तै ही शिवमग धावै ।
संयम अघनाशन असिधारा, संयम है शिरताज हमारा ।।३।।
संयम मुकुट धर्म धर धारै, संयम तैं विषधर उर हारै ।
संयम जामन मरण निवारा, संयम है शिरताज हमारा ।।४।।
संयम के सब दास बताये, संयम बिना जगत भरमाये ।
संयम मोह सुभट को मारा, संयम है शिरताज हमारा ।।५।।
संयम मन का जीतनहारा, संयम इन्द्रिय रोग निवारा ।
पाप बेलि को नाशनहारा, संयम है शिरताज हमारा ।।६।।
संयम जग विरक्त जिय भावै, संयम को मुनि जग जस गावै ।
संयम धर्म बहू अघ जारा, संयम है शिरताज हमारा ।।७।।
संयम भवसागर नवका सी, संयम धरि जिय शिवपुर जासी ।
संयम कर्म-कलंक निवारा, संयम है शिरताज हमारा ।।८।।

(दोहा)

संयम जग का बंधु है, संयम मात रु तात ।
संयम भव भव शरण है, नमों टेक अघ जात ।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

❀ इति उत्तम संयम धर्म पूजा ❀

उत्तम तप धर्म पूजा

(अडिल्ल छन्द)

अंतर बाहर भेद कहे तप सार जी ।
दुविध भाव अघहार करन भव पार जी ।
तप बारह परकार कर्म-गज केहरी ।
मैं पूजौं इस थानि जानि नित शुभ धरी ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(चौपाई)

भवजल तरण नाव तप भाव, करि अघ नाश जु देव उछाव ।
ऐसो तप निर्मल जल लाय, पूजौं जामन मरण नशाय ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।

त्रिभुवन में तप तिलक समान, याको मुनि धारें हित ठान ।
तपहर चन्दन सुभग मंगाय, मैं पूजौं भव तप नशि जाय ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० ।

(वेसरी छन्द)

तप में निरत लखे बहुतेरे, तप को तपें जु साहब मेरे ।
ऐसो तप अक्षत शुभ आनो, पूजौं फल अक्षय उपजानो ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

(पद्धड़ी छन्द)

यह तप त्रिभुवन में पूज्य सार, यह तप नाना मंगल सुधार ।
ऐसो तप बहु शुभ फल सु लाय, मैं पूजौं तसु फल मदन जाय ।५।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

तप सुर वंछै पै नाहि पाय, तातैं सुर पूजें तप सुभाय ।
ऐसो तप चरु ले भक्ति लाय, मैं पूजौं तसु फल क्षुधा जाय ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

तप कल्पवृक्ष वांछित सुदेइ, तप-दीप अनोपम तम हरेइ ।
ता तप को दीपक रतन लाय, मैं पूजौं तसु फल ज्ञान पाय ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ।

तप ही तैं तीर्थंकर जु होय, तप ही तैं शिव लहि कर्म खोय ।
ऐसो तप को शुभ धूप लाय, मैं पूजौं विधि-ईंधन जराय ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

तप पूजत जग करि पूज्य होय, तप औषधि दुखगद हरन जोय ।
ता तप को बहुविधि फल मंगाय, मैं पूजौं तसु फल शिव लहाय ।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति० ।

तपतैं उर करुणाभाव होय, तप तपें जगत में पूज्य सोय ।
ता तप को उत्तम अर्घ लाय, मैं पूजौं पद अनरघ लहाय ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं नि० ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(गीता छन्द)

तप सार जगमें भेद बारह, भव उदधि को नाव है ।
पाप दाहक तप करन हित, साधु मन उच्छाव है ।।
तप देय सुख दुख दूरि करि है, और कहं लग गाइये ।
इमि जानि पूजौं अर्घ लेकर, तासु फल शिव जाइये ।१।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगायार्घं ।

(वेसरी छन्द)

जिन गुण सम्पति है तप मीता, त्रेसठ वास होय जिन गीता ।
भिन भिन तिथियन में सुखदाई, यह तप अनशन जजि गुण गाई ।२

ॐ ह्रीं जिनगुणसम्पत्तितपधर्मांगायार्घं ।

कर्म क्षपण तपके उपवासा, इकसौ अड़तालिस जिन भासा ।
भिन भिन तिथियनमें सुखदाई, यह तप अनशन जजि गुण गाई ।३

ॐ ह्रीं कर्मक्षपणतपधर्मांगायार्घंम् ।

(चाल--जोगीरासा)

सिंहनिक्रीड़त तप दिन सौ अरु जान सतत्तरि भाई ।
तिनमें इकसौ जानि पैंतालिस बास कहे सुखदाई ।।
बाकी बत्तिस जान पारणा यह विधि जिन धुनि माहीं ।
यह अनशन तप जानि जजौं मैं अन्त लेय हित ठांही ।४।

ॐ ह्रीं सिंहनिष्क्रीडिततपधर्मांगायार्घं ।

भद्र सर्वतो तप के शुभ दिन एक सैकड़ा जानों ।
हैं उपवास पचत्तरि अद्भुत पारण पचविस मानों ।।
इसकी विधि भिन भिन जिन भासी सो तप अनशन गाया ।
अर्घ लेय मैं पूजौं मन वच काय भक्ति जुत भाया ।।५।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्रतपधर्मांगायार्घं ।

महा सर्वतो भद्र बड़ो तप दिन दोसै पैंताली ।
इकसौ छिनवै बास कहे जिन पारण गिन नव चाली ।।
ताकी विधि जिन शासन में लखि, विधिजुत करना भाई ।
यह अनशन तप जानि जजौं मैं, अर्घ लेय हितदाई ।।६।।

ॐ ह्रीं महासर्वतोभद्रतपधर्मांगायार्घं ।

लघु निष्कीडित के दिन जिन धुनि बीसी चारि कहे हैं ।
तिनमें बीस जु कहे पारणा साठि उपास लहे हैं ।।
करने की विधि जिन धुनिमें लखि ताको करिये भाई ।
यह तप अनशन जानि जजौं मैं अर्घ आनि सुखदाई ।७।

ॐ ह्रीं लघुनिष्कीडिततपधर्मांगायार्घं ।

(वेसरी छन्द)

नव पारन उपवास पचीसा, दिन चौंतीस कहे जगदीसा ।
मुक्तावलि तपविधि जिन जाई, यह अनशन तप जजि सुखदाई ।

ॐ ह्रीं मुक्तावलितपधर्मांगायार्घं ।

मास मास के छह उपवासा, एक वरस दुई सत्तरि खासा ।
यह कनकावलि विधि श्रुत गाई, यह तप अनशन जजि सुखदाई ।

ॐ ह्रीं कनकावलितपधर्मांगायार्घं ।

सौ अनशन पारन उनईसा, इकसौ उनइस दिन शुभ दीसा ।
जिन भाषित आचामल भाई, यह अनशन तप जजि सुखदाई ।१०

ॐ ह्रीं आचाम्लतपधर्मांगायार्घं ।

चौवीस वास पारना चौई, सब दिन अड़तालीस हीनोई ।
तप जु सुदरशन विधि श्रुत जानो, यह अनशन तप जजि सुखदानो ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनतपधर्मांगायार्घं ।

एक बरस तक बास करंता, उत्तम तप जिनवाणि भणंता ।
ताके भेद बहुत हैं भाई, यह अनशन तप जजि सुखदाई ।१२।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टतपधर्मांगायार्घं ।

भूख प्रमाण थकी लघु खइये, सो अवमौदर तप वरनइये ।
यह तप विधि भूधर पविमाना, सो मैं जजौं अरघ कर आना ।१३।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपधर्मांगायार्घं ।

आज इसी विधि भोजन पइये, तौ हम लेय नतर थिर रहिये ।
ऐसी विधि परतज्ञा ठानै, सो तप जजौं कर्मगिरि भानै ।१४।

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतपधर्मांगायार्घं ।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

त्यागै इक दुई त्रय रस भाई, चार पांच पट् तजि नहिं खाई ।
ऐसो रस परित्याग सु ठानै, सो तप जजौं कर्म गिरि भानै ।१५।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपधर्मांगायार्घं ।

आसन दिढ़ भू सोधि करावै, थिरता भजै सु तन न हिलावै ।
शय्याशन तप या विधि ठानै, सो तप जजौं कर्म गिरि भानै ।१६।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपधर्मांगायार्घं ।

काय कसैं मन आनंद पावै, सो तप कायकिलेश कहावै ।
शोक हरै सुख करै महानों, सो तप जजौं कर्मगिरि भानै ।१७।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपधर्मांगायार्घं ।

(अडिल्ल छन्द)

मुनि को जो परमादवशी दूषण लगै ।
तत्क्षण गुरु पै जाय जु प्रायश्चित मगै ।।
जो आचारज दण्ड देंय सो लेय ही ।
तप प्रायश्चित जजौं अरघ शुभ देय ही ।।१८।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपधर्मांगायार्घं ।

देव धर्म गुरु और थान जो पूज हैं ।
तीरथ अतिशय सिद्धक्षेत्र अघ धूज हैं ।।
तिनकी विनय अनूप करै तजि मान जी ।
सो तप विनय विचार जजौं शिवदान जी ।।१९।।

ॐ ह्रीं विनयतपधर्मांगायार्घं ।

जो मुनि को मग चलत तथा तप करत ही ।
उपजै तनमें खेद कर्मबल तैं सही ।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

ता मुनि के करि पांव चंपिये जो सुधी ।
सो तप वैयावृत्य जजौं नाशक कुधी ।।२०।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यतपधर्मांगायार्घं ।

जिन धुनि वाचै सुनै हरष करि चिंतवै ।
धरि जिनकी आम्नाय पाप मल को चवै ।।
सो है तप स्वाध्याय ज्ञान उर लावनो ।
सो यह तप मैं जजौं स्वर्ग सुख पावनो ।।२१।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपधर्मांगायार्घं ।

काय ममत को त्याग यतीश्वर थिति करै ।
काय त्याग तप धार कर्म अरि मद हरै ।।
तप व्युत्सर्ग महान जानि मन भावनो ।
सो मैं पूजौं अर्घ धारि कर पावनो ।।२२।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपधर्मांगायार्घं ।

मन वच काया एक थान थिर लाइये ।
आरत रौद्र कुभाव सबै ही ढाइये ।।
या वपुतैं जिय भिन्न क्षुद्र जानै सही ।
सो तप ध्यान अनूप पूजि लूं शिवमही ।।२३।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपधर्मांगायार्घं ।

(गीता छन्द)

इमि धारि तपके भेद बारह सकल कर्म विनासियो ।
यह कर्म भूधर नाश कारण वज्रसम जिन भासियो ।।

जे जीव चाहैं तरन भवदधि ते लहैं तप सारजी ।
हम शक्तिहीन न करन शक तातैं जजैं उर धारजी ।२४।

ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मांगायार्घं ।

जयमाला

(दोहा)

तप तारै भव उदधिसों, टारै पाप असाधि ।
धरै महा सुख थल विषैं, देहै ध्यान समाधि ।।१।।

(वेसरी छन्द)

तप ही सार धरम है भाई, तप ही तैं मुनिवर शिव पाई ।
सिद्धक्षेत्र जे सिद्ध सजे हैं, ते सब पहिले तपहि भजे हैं ।।२।।
तप भव उदधि तरण नवकाया, तपकौ जस गणधर ने गाया ।
ये तप ही जग जिन सुखदाई, तात मात स्वामी तप भाई ।।३।।
तप को तो तीर्थंकर ध्यावैं, तप विन मोक्ष कभी नहिं पावैं ।
तप शिवमहल तनौ मग जानौं, तप ही तैं सब कर्म हरानौं ।।४।।
तप सा तीर्थ और नहिं कोई, तप ही तारन सब विधि होई ।
तप शिववाट दिखावन दीवा, तप ही तैं सुख होय अतीबा ।।५।।
तपतैं इन्द्री मन भट हारैं, तप निज बलतैं मोह निवारै ।
तपको कायर जिय नहिं पावै, तपको महत पुरुष उमगावै ।।६।।
अन-जल विन तपतैं सुख होई, तपतैं तुच्छ भखैं पुन जोई ।
तपतैं खानपान परमाना, तपही तैं रस विन सब खाना ।।७।।
दिढ आसन तन तपतैं जानो, काय कष्ट तैं जिय सुख जानो ।
तप ही लगे पापको धोवै, तपतैं विनय नाव उर होवै ।।८।।

धरमी काय तनी सुश्रूषा, तप ही करवावै अघ लूसा ।
शास्त्र पठन है तप सुखकारा, यातैं होवै वपुतैं न्यारा ।।९।।
तप ही मन इन्द्रियवश आनै, ध्यान धरत वसु कर्म हरानै ।
यातैं तप लागत है प्यारा, शुद्ध भावतैं है अघ छारा ।।१०।।

(दोहा)

तप भेंटत भवताप को, शांत भाव दिढ होय ।
हरै भरम देवै धरम, सो तप पूजों लोय ।।११।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मांगायार्घं पूर्णार्घं ।

❋ इति तप धर्म पूजा ❋

उत्तम त्याग धर्म पूजा

(चौपाई)

त्याग धरम में ममत न कोई, त्याग धरम सुरतरु अवलोई ।
वांछा त्याग धरम में नाहीं, सो वृष थापि जजौं इस ठाहीं ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(मुणयणानंद की चाल)

नीर शुभ क्षीरदधि सार सो लाइ जी ।
साधु चित तुल्य निर्मल सु मन भाय जी ।।

कनक झारी भरी भक्ति मन लाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

चंदनादि गंध सार नीरमें रिलाइयो ।
अगर सौरभि थकी भक्ति भरवाइयो ।।
कनक पातर विषैं धार ढरवाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० ।

तन्दुलं समुज्जलं जु अक्षतं सुहाय जी ।
खंड विन सोहने विलोकि हरषाय जी ।।
थाल कंचन भरौ भाव शुभ लाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

पुष्प नाना प्रकार गंध जुत सार जी ।
कल्पवृक्षादि के हेममय थार जी ।।
माल करि सोहनी भक्ति उर लाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ।

लाय नैवेद्य विन खेद अति सोहना ।
मोदकादि सरस सार धार मन मोहना ।।
स्वर्णभाजन विषैं भक्ति भर लाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।

रत्नमय दीप कर ज्योति परकाशिया ।
मोह अंधकार तासु तेजतैं विनाशिया ।।
हेमथाल धारि भक्ति भाव चित लाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप दश गंध की सार सौरभ भरी ।
चंदनादि ले कनक धूप आयन धरी ।।
अग्नि संग खेय मिस धूम विधि जाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ।

श्रीफलं सु लौंग पुंगीफलं जु सारजी ।
खारका बदाम नारियल सु मनहार जी ।।
धारि स्वर्णपात्र में सु भक्ति उर लाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति० ।

नीर गंधाक्षतं पुष्प चरु सार जी ।
दीप अरु धूप फल अर्घ मनहार जी ।।
भक्ति भाजन विषैं धारि चढ़वाइयो ।
त्याग धर्म जजौं स्वर्ग शिवदाइयो ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति० ।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

अथ प्रत्येकार्घाणि

(चाल--मणुयणानंद की)

कामदेव के समान काय सुन्दर घनी ।
सुभग आकार मनुदेव तनसी बनी ।।
जानि पुद्गलीक जिमि चपल चंचल सही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।१ ।।

ॐ ह्रीं तनममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

मात रज मेल मिलि कर्म-वश थाय जी ।
गर्भमें रह्यो सु मास नव दुख पाय जी ।
दूध मांगे विना न देई निज मातही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।२ ।।

ॐ ह्रीं जननीममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

बाप वीरज थकी आप मैलो भयो ।
काल पाय ह्वै जुदा न संग ताको रयो ।।
कौन काको भयो सर्व स्वारथ सही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।३ ।।

ॐ ह्रीं पितृममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

पुत्र रूपवन्त पूर्व पुण्यतैं लहाइये ।
पापके विपाकतैं सु शीघ्र नशि जाइये ।।
मोह वश होय जिय लहै दुख धाम ही ।
तासु को ममत्व त्याग धर्म पूजि शिव लही ।।४ ।।

ॐ ह्रीं पुत्रममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

पाप साजि राज काज भाग्यतैं लहाइये ।
तासु रक्षोपहार में स्वत न गमाइये ।।
भोग परिजन करै आप श्वभ्र धाम ही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।५।।

ॐ ह्रीं राज्यममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

रत्न सुवरण रजत आदि धन पाइये ।
घोटका विमान वाहनादि हू लहाइये ।।
जानि चपला समान अथिर दुख धाम ही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।६।।

ॐ ह्रीं धनबाहनादिममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

सहस छिनवै तिया जानि अपछर जिसी ।
विनय भरपूर रूप रंग रंभा जिसी ।।
जानि संपति सकल पाप विपदा मही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।७।।

ॐ ह्रीं स्त्रीममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

संग परिजन मनो हाट मेले वनो ।
धर्मशाला विषैं तीर्थयात्री मनों ।।
जानि गृह मोहकी सांकली है सही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।८।।

ॐ ह्रीं गृहकुटुम्बममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

मूल वसु कर्मको कषाय भाव मानिये ।
तासुके प्रसंग चार योनि में भ्रमानिये ।।

सकल संसार का भार यह ही सही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।।९।।

ॐ ह्रीं कषायभावत्यागधर्मांगायार्घं ।

राग अरु द्वेष दोय मोह विधितैं बने ।
तासु वस जीव जगमें लहै दुख घने ।।
पाप पुण्य को प्रसार तासु तैं ही सही ।
राग द्वेष मोह के सु त्याग पूजि शिव लही ।१०।

ॐ ह्रीं रागद्वेषत्यागधर्मांगायार्घं ।

मात सुत नारि धन राज तन सार जी ।
राग अरु द्वेष सर्व दु:ख कर्तार जी ।
पाप पुण्य धारि संसार दु:ख धाम ही ।
मोह तजि तासु को सु पूजि त्याग शिव लही ।११।

ॐ ह्रीं समस्तममत्वत्यागधर्मांगायार्घं ।

जयमाला

(दोहा)

त्याग तरण तारण सही, भव सागर में नाव ।
त्याग बनें नहिं देव पै, मनुज लह्यो यह दाव ।।१।।

(वेसरी छन्द)

त्याग जोग सबही संसारा, पुद्गल द्रव्य त्याग निरवारा ।
त्याग रतन कंचन भण्डारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।२।।
हाथी घोटक रथ सब त्यागा, साधु आप आतम रस लागा ।
मात ताततैं नेह निवारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।३।।

त्याग राज बंधन दुखदाई, नारि पुत्र तै नेह तुड़ाई ।
अनुभव रस मारग विस्तारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।४।।

आरत भाव त्यागि दुखदाई, त्याग योग्य सब मान बढ़ाई ।
रौद्रध्यान त्यागै अधिकारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।५।।

क्रोध मान छल लोभ गमावै, सो उत्कृष्टा त्याग कहावै ।
हास्य शोक भय भाव निवारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।६।।

मद मत्सरको त्याग कराया, त्याग अरति रति विसन बताया ।
राग द्वेषका तजै प्रसारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।७।।

परमें ममत त्यागिकैं भाई, निज परिणति में प्रीति लगाई ।
त्याग पाप परिणति की धारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।८।।

जगतैं विरचि आप रस भीना, तिनने शिवमग नीकैं चीना ।
त्याग जगत दुखतैं सिरभारा, जो त्यागै सो गुरू हमारा ।।९।।

(सोरठा)

त्याग धरम तप सार, भव भव शरणो मैं गहों ।
जजौं त्याग भवतार, ता प्रसाद तैं शिव लहों ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगायार्घं पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

।। इति त्यागधर्म पूजा ।।

उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजा

आकिंचन वृष नगन अवस्था है सही ।
तामें दुविध परिग्रह त्याग सु धुनि कही ।।
धन धान्यादिक बाह्य राग अन्तर गिनो ।
इनतैं रहित सु नगन धरम जजि अघ हनो ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टकम्

(त्रिभंगी छन्द)

जल लाया नीका सुरतरिणी का उज्वल ठीका धार करी ।
अति गंध सुहाई निर्मल भाई हर्ष बढ़ाई पाप परी ।।
ले कनक सुझारी भक्ति उचारी भव दुखहारी हाथ लई ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. ।

शुभ चन्दन आनी घसी संग पानी गंध सुहानी हाथ धरी ।
अलि ऊपर आवै वासु लुभावै शुद्ध करावै नेह भरी ।।
ऐसी गंध लावो हर्ष बढ़ाओ ज्ञान जगावो मोक्ष मही ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. ।

शुभ अक्षत लाया विमल सुहाया खंड विन भाया सुखदाई ।
मुक्ताफल जानौ अधिक सुहानौ गंध सु थानौ गह भाई ।।

ऐसा ले अक्षत जनमन हरषत भक्ति करत ते शीश नई ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्व० ।

ले फूल सु प्यारा गंध भरारा वर्ण अपारा शोभ घने ।
नाना आकारा अलिगण धारा सुरद्रुम सारा जेम ठने ।।
ले कुसुम जु आया माल बनाया नेह लगाया भक्ति भई ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

नाना रस आनै अधिक सुहाने षट्विधि जानै सुखदाई ।
शुभ मोदक कीने हाथ सु लीने मधु रस भीने चरु लाई ।।
धरि कंचन थाला भक्ति विशाला कह गुणमाला ज्ञानमई ।
आकिंचनधर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

मणि दीपक नाना तेज महाना मोह नशाना ज्ञान करा ।
धरि कंचन थारी भक्ति उचारी अर्थ अपारी पाप हरा ।।
मिथ्या तम धोवै गुणमयी पोवै शिवमग जोवै ज्योति मई ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।७।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

दश गंध मिलाई धूप बनाई अधिक सुहाई सुखकारी ।
मलियागिरि डारा अगर सुधारा अलि गुंजारा मदधारी ।
ऐसी करि लीनी धूप नवीनी भक्ति सभीनी भावमई ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।८।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

फल लौंग सुपारी श्रीफल भारी भक्ति भरारी गह आनौ ।
फिर लाय बदामा खारिक ठामा वाधित कामा फल जानौ ।।
ऐसे फल लायो अति हरषायो मुख गुन गायो पुण्य लही ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।९।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल चन्दन लाया अक्षत भाया फूल मंगाया चरु जु धरी ।
ले दीपक थारा धूप अपारा श्रीफल धारा अर्घ करी ।।
बहु द्रव्य जु लाये भक्ति बढ़ाये ज्ञान सु पावे ध्यान लही ।
आकिंचन धर्मा जजि शुभ कर्मा दे फल परमा थान सही ।१०।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व० ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

(चाल मुणयणानंद की)

सर्व जग है अथिर ध्रौव्य नहिं मानिये ।
तात माता तिया भ्रात सुत जानिये ।।
चक्रवर्ती तने भोग क्षय जाय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।१।।

ॐ ह्रीं अनित्यरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

आयु पूरन भये शर्न नहिं कोय जी ।
औषधि सु मन्त्र बल तन्त्र बहु होय जी ।।
देव खग शर्न नहिं मर्न दिन आय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।२।।

ॐ ह्रीं अशरणरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

अन्य तैं प्रीति संसार सो है सही ।
या थकी राग अरु द्वेष उपजै मही ।।
राग रुख चारि गति माहिं सुखदाय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।३।।

ॐ ह्रीं संसाररूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

जीव एकहि फिरै चार गति आप ही ।
एक भोगै सदा पुण्य या पाप ही ।।
कोउ नहिं दूसरो आप दुःख पायजी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी ।।४।।

ॐ ह्रीं एकत्वरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

सर्व द्रव्य भित कोई मिले न जानिये ।
नीर क्षीरके समान जीव देह मानिये ।।
जानि इम साधु निर्ग्रन्थ सुक्ख पायजी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी ।।५।।

ॐ ह्रीं अन्यत्वरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

देह में पवित्र वस्तु एक नहिं पाय है ।
सप्त धातू भरी द्वार नौ बहाय है ।।
जीव निर्मल महा शुद्ध चेतनाय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी ।।६।।

ॐ ह्रीं अशुचिरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

जोग मिथ्यात्व अव्रत कषाय जानिये ।
और परमादभाव कर्म आठ आनिये ।।

त्यागि दुर्भाव साधु शुद्ध रूप ध्याय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भायजी ॥७॥

ॐ ह्रीं आस्रवरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

अन्यतैं विरक्त है जु आपरूप ध्यावही ।
रागद्वेष को विहाय शुद्ध तत्त्व पावही ॥
भाव संवर यही जानि सुखदाय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ॥८॥

ॐ ह्रीं संवररूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

पाप पुण्य भावतैं जु कर्मबंध है सही ।
शुद्धता प्रभाव कर्म जाय निर्जरा लही ॥
जानि इस भांति विन राग पद ध्याय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ॥९॥

ॐ ह्रीं निर्जरारूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

तीन लोक नित्यरूप जानि नराकार जी ।
चार गति घूमि जीव दुःख ले अपार जी ॥
लोक को स्वरूप जानि आत्मतत्त्व ध्याय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ॥१०॥

ॐ ह्रीं लोकरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

वस्तु को स्वभाव धर्म जीव रक्षा कही ।
दर्श बोध आचरण जु रत्न तीनों सही ॥
चार विधि दान अरु धर्म दश ध्याय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ॥११॥

ॐ ह्रीं धर्मरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

गैर वस्तु को जु है सुलभ अपनावना ।
ज्ञान निधि आपनी न सहज ही लहावना ।।
ताहि पाय साधु शुद्ध आत्मरूप ध्याय जी ।
धर्म आकिंचन पूजि भक्ति भाय जी ।।१२।।

ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभरूपोत्तमाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

भ्रात सुत नारि गज घोटकादि भाइ है ।
दास दासी पिता सुतादि परिजनाइ है ।।
संग चेतन तजो जानि दु:खदाय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।१३।।

ॐ ह्रीं चेतनरूपबाह्यपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

रत्न कंचन रजत ठाम वस्तर सही ।
महल बन बाग बहुग्राम जुत शुभ मही ।।
संग निर्जीव छोडि शुद्ध रूप ध्याय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।१४।।

ॐ ह्रीं अचेतनरूपबाह्यपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

अन्तरंग संग राग आदि अरु द्वेष है ।
या थकी जीव लहै चार गति किलेश है ।।
जानि यह अन्तरंग संग छुड़वाय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।१५।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

नग्न रूप धारिके जु संग दुविधा तजैं ।
नेह देह को जु छोड़ि आप थिरता भजैं ।।

ता प्रसाद भक्ति माहिं ही रहैं न आय जी ।
धर्म आकिंचना पूजि भक्ति भाय जी ।।१६।।

ॐ ह्रीं विविधपरिग्रहत्यागाकिंचन्यधर्मांगायार्घं ।

अथ जयमाला

(दोहा)

आकिंचन इस जीव को, मिल्यो न शिवमग पाय ।
अब मैं पूजों नगन पद, फल यह मोह मिटाय ।।१।।

(वेसरी छन्द)

आकिंचन वृष दुर्धर जानो, याको धारि सकै न अयानो ।
ज्ञानी तो यामें रुक जावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ।।२।।
वांछा रोग जासु उर नाहीं, सो आकिंचन धर्म धराई ।
विषय भिखारी जीव न पावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ।।३।।
आकिंचन्य जगत जिस प्यारा, जो धारै सो गुरु हमारा ।
परिग्रह धारि ताहि न पावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ।।४।।
आकिंचन्य इन्द्र सुर सेवैं, ता प्रसाद निज आतम बेवैं ।
लोभी जन यातैं डरि जावैं, वीतराग ह्वै धरम निभावैं ।।५।।
आकिंचन वृष मोक्ष निधाना, याही तैं ह्वै केवलज्ञाना ।
तन धन रंजक याहि न पावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ।।६।।
आकिंचन हाथी का भारा, विषयी जीव सुसा किम धारा ।
रागी नाम सुनत सु रझावै, वीतराग ह्वै धरम निभावै ।।७।।
आकिंचन्य धरम गढ़ नीका, ता बल ध्रौव्यराज ह्वै जीका ।
हम या व्रत को शीश नवावैं, साधूजन गहि शिवपुर जावें ।।८।।

(दोहा)

आकिंचन जो आदरै, शिव पहुँचावै सार ।
और सकल कर्मनि लुटैं, इमि लखि गहु वृषसार ।।९।।
आकिंचन की सेवतैं, नसैं करम वटमार ।
पूजौं मैं आकिंचना, ज्यौं पाऊँ भव पार ।।१०।।

ॐ ह्रीं आकिंचन्यधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

।।इति आकिंचन धर्म पूजा ।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा

(अडिल्ल छन्द)

नारि देव नर पशू काष्ट चित्राम की ।
ब्रह्मचर्य व्रत धारिन के नहिं काम की ।
मन वच काया मात सुता भगिनी गिनै ।
ऐसो व्रत ब्रह्मचर्य पूजि हम अघ हनै ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

(त्रिभंगी छन्द)

ले निर्मल पानी अति सुख दानी, उज्वल आनी गंग तनों ।
धरि कनक सु झारी मन हरनारी, निज कर धारी हरष ठनौं ।।
करि भक्ति सु लाऊँ अति गुण गाऊँ, पुण्य बढ़ाऊँ सुखदाई ।
जजि ब्रह्म सुचारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

ले बावन चन्दन दाहनिकन्दन, अगर घिसन्दन नीर करी ।
तिस गंध लुभाया षटपद आया, गुंज कराया हर्ष धरी ।।
शुभ गंध मंगायो पात्र धरायो, बहु महंकायो सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

ले अक्षत चोखे लखि निरदोखे, उज्वल धोके हित धारी ।
मुक्ताफल जैसे गन्धित तैसे, दीरघ जैसे जो भारी ।।
निर्मल जु अखण्डित सौरभ मण्डित, शशिमद खंडित सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्व० ।

बहु फूल जु लाया गंध सु भाया, रंग सुहाया सुख खानी ।
तसु माल बनाई सुभग सुहाई, अलिगण भाई मनमानी ।।
मैं निज कर लायो हरष बढ़ायो, जिन गुण गायो सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

नैनेद्य सु नीका रसजुत ठीका, सुखदा जीका गुण थानो ।
करि मोदक लाया मधुर सुहाया, थाल भराया, थुति गानो ।।
जिन अग्र चढ़ाऊँ मुख गुण गाऊँ, अति हरसाऊँ सुख पाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

मणि दीपक करिया तिमिर सु हरिया, ज्योति सुधरिया तेज खरा ।
धरि थाल सु लाया हरष बढ़ाया, अति गुण गाया नेह धरा ।।

मैं करौं आरती गाय भारती, धर्म सारथी शिवदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

करि धूप पियारी दशविधि धारी, गंध अपारी मनमानी ।
शुभ चन्दन डारा अगर अपारा, द्रव्य सु प्यारा बहु आनी ।।
अपने कर लाया नेह लगाया, अगनि जराया सुस गाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी बरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

ले लौंग बदामा श्रीफल कामा, खारिक ठामा हम लाये ।
पुंगीफल आदी बहुफल स्वादी, भक्ति अराधी सुख पाये ।।
भरि थाल अपारा शिव फलकारा, पाप विडारा सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल चन्दन लाया अखित सु भाया, फूल मिलाया गंध भरी ।
चरु दीपक आनो धूप दहानो, फल अधिकानो शिवकारी ।।
वसु द्रव्य मंगाई अर्घ बनाई, भगति बढ़ाई शिवदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

तिया वास तहं वास न कीजै, अपना शीलभाव रखि लीजै ।
सकल नारि जननी सम होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।१।

ॐ ह्रीं स्त्रीसहवासवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घं ।

नारी तन रतिभाव न देखै, हाव भाव विभ्रम नहिं पेखै ।
शिल धर्मतैं निज सुख जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।२।।

ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

राग वचन कबहूँ नहिं बोलैं, निज वच जिनवाणी सम तोलै ।
राग वचन सुन प्रीति न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।३।।

ॐ ह्रीं रागवचनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

पूरब भोग किये न चितारै, सोही शील भाव उर धारै ।
राग भाव तजि निज रस जोबै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।४।।

ॐ ह्रीं पूर्वभोगानुस्मरणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

काम उदीपक अशन न खावै, षड्रस माहि न जिय ललचावै ।
निशदिन शील भावना भावै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।५।।

ॐ ह्रीं वृष्येष्टरसवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

तन श्रृंगार नहीं मन भावै, भूषित देखि नहीं हरसावैं ।
शीलाभरण विभूषित होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।६।।

ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्कारवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

नारी की शय्या नहिं पोंडै, कपड़ा नारि तनो नहिं ओड़ै ।
शीलविरत ताकै दिढ़ होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।७।।

ॐ ह्रीं स्त्रीशय्यासनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कबहुं न कामकथा मन आई, विकथा काननतैं न सुनाई ।
ताके मदन चाह नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।८।।

ॐ ह्रीं कामकथावर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

पूरण उदर अशन नहिं खावै, ऊनोदर में चित रमावै ।
शील पालना ताकै होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।९।।

ॐ ह्रीं उदरपूर्णाशनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

नवधा शील धरै जो कोई, ताके ब्रह्मचर्य व्रत होई ।
इस व्रततैं भव तरनो होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१०।।

ॐ ह्रीं नवधाशीलपालनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामदेव वश तन तप होई, जिमि तरु होय तुषार दसोई ।
यह शोषण शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।११।।

ॐ ह्रीं शोषणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामबाण जाके मन मांहीं, मन संताप रहै अधिकाई ।
कामबाण संताप न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१२।।

ॐ ह्रीं संतापकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामबाण उच्चाट करावै, रहै उदास कछू न सुहावै ।
उच्चाटन शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१३।।

ॐ ह्रीं उच्चाटनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामीजन को काम सतावै, ता वश ताहि न कछू सुहावै ।
वशीकरण शर बाण न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१४।।

ॐ ह्रीं वशीकरणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामदेव तैं गहल जु होई, सुधि बुधी ताहि रहै नहिं कोई ।
सो मोहन शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१५।।

ॐ ह्रीं मोहनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

ये शर काम कहे लौकीका, सबतैं बड़ौ मोह रिपु जीका ।
जहं ये पांच बाण नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१६।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

रूप तिया को लखि मुलकावै, वृथा पाप शिरमांहि चढ़ावै ।
ये शर ताके मांहि न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१७।।

ॐ ह्रीं मुलकनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

बार बार तिय देखन चाहै, जाको उर अवलोकन दाहै ।
जाके उर यह शर नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१८।।

ॐ ह्रीं अवलोकनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

ये चाहै पै ताहि न भावै, हास्य वचन कहि ताहि रिझावै ।
यह शर काम तहां नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१९।।

ॐ ह्रीं हास्यकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

परगट वचन कहन नहिं पावै, सैन करै तिय जिय ललचावै ।
जाके यह शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।२०।

ॐ ह्रीं इंगितचेष्टावर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामदेव जब अधिक सतावै, मिलै तिया नहिं प्राण गमावै ।
ये शर काम जहां नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।२१।।

ॐ ह्रीं मारणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

दश विध कामबाण नशि जाई, शील बाढ़ि पालै नवधाई ।
सो जिय शिवसुन्दरिको जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।२२।

ॐ ह्रीं शुद्धब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

जयमाला

(दोहा)

शील शिरोमणि जगतमें, सकल धरम शिरमौर ।
शिवकर अघ हर पुण्य भर, जजों शीश गुण ठौर ।।१।।

(वेसरी छन्द)

शील सिद्ध थल का मग जानो, शील सुरग सरिता मन आनो ।
शील भावतैं अघ नशि जाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।२।।
शील मनुजभव में ही गाया, नहिं निज जन्म सफल करि भाया ।
शील समुद-संसार तराई, सांचा धर्म शील है भाई ।।३।।
शील सहाय करै जग जाकी, सुरनर सेव करत हैं ताकी ।
ताको नाम लेत दुख जाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।४।।
शील सती सीता ने धारो, अग्निकुण्ड शीतल करि डारो ।
शील प्रभाव जगत पुजवाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।५।।
शील सती द्रौपदि ने धारो, ता फल कीचक भीम विदारो ।
भूप हरी पीछैं फिर आई, सांचा धर्म शील है भाई ।।६।।
शील सती नीली मन आनो, सुरनर पूजा भई जग जानो ।
दोष सकल जातें नशि जाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।७।।
शील गुणवती कन्या लीनो, ताको देव सहाय जु कीनो ।
शीलविरत तैं सुरगति पाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।८।।
शील सती सोमा ने धारा, ता फल सरप भयो मणिहारा ।
जग जश ले सुरलोक सिधाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।९।।

सेठ सुदर्शन यह व्रत कीनों, पुण्य प्रताप सुजश जग लीनों ।
शील सुरेन्द्र सिद्ध पद दाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

* इति उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा *

*

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

धरम जगतमें सार, उत्तम क्षमा जु आदि दे ।
भवदधि तारनहार, नमों धरम दशलक्षिणी ।।१।।

(वेसरी छन्द)

क्षमा धरम सब जगमें आला, निज परिणति को है रखवाला ।
क्षमा धरम गुण रतन भंडारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।२।।

मार्दव धरम सकल गुण वृन्द, मान विहंडन शिवसुख कंदा ।
मार्दव गुण तैं विनय प्रसारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।३।।

आर्जव रीति सकल सुखदानी, सरल स्वभाव कुटिलता हानी ।
आर्जव शिवपुर पंथ सहारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।४।।

सत्य धरम सम सार न कोई, सत्य धरम जिनभाषित होई ।
सत्य सकल सन्तनि को प्यारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।५।।

शौच धरम निर्मलता होई, शौच धरम सब विध मल खोई ।
शौच धरम शिवमंदिर द्वारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।६।।

संयम मन इन्द्रिय वश लावै, त्रस थावर के प्राण रखावै ।
संयम भाव सदा उर धारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।७।।
तप सब आशा पाशी तोरे, कर्म अनादि बंध को छोरे ।
तप जल तैं ह्वै अघ मल न्यारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।८।।
त्याग पाप-मल धोवन हारा, त्याग धरम उर करै उजारा ।
त्याग भावतें कर्म निवारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।९।।
नगन मोक्ष का बड़ा निशाना, नगन विना नाहीं शिव थाना ।
आकिंचन वृष नगन विचारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।१०।।
ब्रह्मचर्य शिवनारि मिलावै, ता विन जीव जगत भरमावै ।
ब्रह्मचर्य ह्वै थिर मन धारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।११।।
ऐसे दश विधि धरम पियारा, जन्म रोग हर औषधि सारा ।
'टेक' धरम निज पर निरवारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।१२।।

(दोहा)

आतम अवलोकन धरम, दशविध धरि मन लाय ।
जल फलादि वसु द्रव्य तैं, धर्म जजौं हरषाय ।।१३।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिब्रह्मचर्यपर्यंत-दशलक्षणधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

दशविधि धर्म उपाय को, भवसागर तरि जाय ।
मनवांछा मेरे यही, भव भव होय सहाय ।।१४।।

। इत्याशीर्वादः ।

(फिर १०८ जाप्य देकर आरती करके शांति विसर्जन करे)

इति दशलक्षणधर्म मण्डल विधान समाप्त ।

※

सोलहकारण पूजा

(अडिल्ल)

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये ।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये ।।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं ।
हम हू षोडश कारन भावैं भावसौं ।।१।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्रावतरावतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र मम सतिहितानि भवत भवत वषट् ।

कंचनझारी निरमल नीर, पूजौं जिनवर गुनगम्भीर ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।।१।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवर के पाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।। दरश० ।।२।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

तंदुल धवल सुगंध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जग भूप ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।। दरश० ।।३।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

फुल सुगंध मधुप गुंजार, पूजौं जिनवर जग आधार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।।४।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

सद नेवज बहुविध पकवान, पूजौं श्री जिनवर गुणखान ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।। दरशवि० ।।५।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

दीपकजोति तिमिर छयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।। दरश० ।।६।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय धूपं नि० ।

अगर कपूर गंध शुभ खेय, श्रीजिनवर आगे महकेय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।।दरश० ।।७।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

श्रीफल आदि बहुत फलसार, पूजों जिन वांछित दातार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।। दरश० ।।८।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल फल आठों दरव चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मन लाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ।। दरश० ।।९।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

जयमाला

(दोहा)

षोड़शकारण गुण करै, हरै चतुरगति वास ।
पाप पुण्य सब नाशकैं, ज्ञान भान परकास ।।१।।

(चौपाई १६ मात्रा)

दरशविशुद्ध धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारै जो प्रानी, शिववनिता की सखी बखानी ।।२।।
शील सदा दिढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै ।
ज्ञानाभ्यास करै मनमांही, ताकैं मोह महातम नाहीं ।।३।।
जो संवेगभाव विस्तारै, सुरग मुकतिपद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विसेखै, इह भव जस परभव सुख देखै ।।४।।
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरै करमशिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै ।५।
निशदिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भवनीर तिरैया ।
जो अरहंतभगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ।।६।।
जो आचारज भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है ।
बहु श्रुतवन्त भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई ।।७।।
प्रवचनभगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानंद दाता ।
षट् आवश्य काल जो साधै, सो ही रतनत्रय आराधै ।।८।।
धरमप्रभाव करै जो ज्ञानी, तिन शिवमारग रीति पिछानी ।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ।।९।।

(दोहा)

एही सोलहभावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देवइन्द्रनरवंद्यपद, 'द्यानत' शिवपद होय ।।१०।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अर्घ्य के बाद विसर्जन करना चाहिये)

*

दर्शन-पूजा

(दोहा)

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीव सोपान ।
जिह विन ज्ञान चरित अफल, सम्यकदर्श प्रधान ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।३।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन सुचि करै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।४।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।५।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।६।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।७।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करै ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।८।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहजै लखै, तत्त्वप्रीति व्योहार ।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुण सार ।।१।।

सम्यग्दरसन रतन गहीजे, जिनवचमें संदेह न कीजे ।
इहभव विभवचाह दुखदानी, परभव भोग चहै मत प्रानी ।।
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये ।
परदोष ढकिये, धरम डिगते को सुथिर कर हरखिये ।।
चउसंघ को वात्सल्य कीजे, धरम की परभावना ।
गुण आठसों गुन आठ लहिकैं, इहां फेर न आवना ।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपञ्चविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

卐

ज्ञान पूजा

(दोहा)

पंचभेद जाके प्रगट, ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यकज्ञान ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्रावतरावतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सतिहितं भव भव वषट् ।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलकेसर घनसागर, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।३।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।४।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै मन शुचि करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।५।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशे महा ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।६।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।७।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।८।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार ।
संशय विभ्रम मोह विन, अष्ट अंग गुनकार ।।१।।

(चौपाई मिश्रित गीता छन्द)

सम्यकज्ञानरतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानौ, अच्छर अरथ उभय संग जानौ ।।
जानौ सुकालपठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये ।
तपरीति गहि बहु मान देकैं, विनयगुन चित लाइये ।।
ए आठ भेद करम उछेदक, ज्ञानदर्पन देखना ।
इस ज्ञानही सों भरत सीझा, और सब पट पेखना ।।२।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

卐

चारित्र-पूजा

(दोहा)

विषयरोग औषध महा, दवकषाय जलधार ।
तीर्थंकर जाको धरें, सम्यकचारित सार ।।१।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौष्ट ।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध्सम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सतिहतो भव भव वषट् ।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।१।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।२।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।३।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन सुचि करै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।४।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।५।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप जोति तमहार, घटपट परकाशैं महा ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।६।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।७।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिव फल करै ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।८।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यकचारित्र धार, तेरहविध पूजौं सदा ।।९।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप थिर नियत नय, तप संजम व्योहार ।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरह विध दुखहार ।।१।।

(चौपाई मिश्रित गीता छन्द)

सम्यकचारित रतन संभालो, पांच पाप तजिकैं व्रत पालो ।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै, नरभव सफल करहु तन छीजै ।।
छीजे सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये ।
बहु रुल्यो नरकनिगोद माहिं, कषाय विषयनि टालिये ।।
शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ।।२।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय-पूजा

(दोहा)

चहुंगतिफणिविषहरनमणि, दुखपावक जलधार ।
शिवसुखसुधासरोवरी, सम्यकत्रयी निहार ।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्रावतरावतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्वल जल अति सोहनो ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति० ।

चन्दन केसर गारि, परिमल महा सुरंगमय ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति० ।

तन्दुल अमल चितार, वासमती सुखदासके ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजै ज्यों थुति करैं ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥४॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ।

दीपरतनमय सार, ज्योत प्रकाशै जगत में ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ।

धूप सुवास बिथार, चन्दन अगर कपूर की ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ।।८।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति० ।

आठ दरब निरधार, उत्तमसौं उत्तम लियो ।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ।।९।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति० ।

सम्यकदरसन ज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारन जान, 'द्यानत' पूजौं व्रत सहित ।।१०।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घं निर्वपामीति० ।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यकदरशन ज्ञान व्रत, इन बिन मुकत न होय ।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय ।।१।।

(चौपाई १६ मात्रा)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबंध कट जावै ।
तासौं शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै ।।२।।
ताकों चहुँगति के दुख नाहीं, सो न परै भवसागरमाहीं ।
जनम जरा मृतु दोष मिटावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।३।।

सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै ।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।४।।
सोई शक्रचक्रपद लेई, तीनलोक के सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव वहावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।५।।
सोई लोकालोक निहारै, परमानंददशा विसतारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।६।।

(दोहा)

एकस्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' कों सुखदाय ।।७।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अर्घ के बाद विसर्जन करना चाहिये)

समाप्त